ओ३म्

आर्य वन्दना

मूल्य ९ रूपये

हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

पूज्य गुरूवर के चरणों में समर्पित

''आचार्य महावीर सिंह''

हे यज्ञ देवता, संदेशा तुम ले जाना
जहाँ कहीं हो ऋषि संग गुरूवर उन तक उसे पहुंचाना
छोड़ हमें मझदार में दोनों
क्यों कर गए किनारे
छलनीकर हृदय हमारे
छोड़ गए किसके सहारे
मन हमारा दुःखी है फिर भी करेंगे काम तुम्हारे,
हे यज्ञ देवता, संदेशा तुम ले जाना
जहाँ कहीं हो ऋषि संग गुरूवर उन तक उसे पहुँचाना
रहे अधूरे स्वप्न तुम्हारे
उन्हें हमें है सजाना
बढ़ा के आगे काम तुम्हारे
प्यार तुम्हारा है पाना
आये भंयकर तूफान पथ में हमें नहीं घबराना
हे यज्ञ देवता, संदेशा तुम ले जाना
जहाँ कहीं हो ऋषि संग गुरूवर उन तक उसे पहुँचाना
छोड़ जुदाई का दुःख गुरूवर
हमें है आगे बढ़ना
गए सौंप जो काम हमें तुम
उसे है हमने करना
प्राणार्पण से करेंगे पूरा यह है वचन हमारा
हे यज्ञ देवता, संदेशा तुम ले जाना
जहाँ कहीं हो ऋषि संग गुरूवर उन तक उसे पहुँचाना
बड़े लगन व श्रद्धा से गुरूवर
किया जो तुमने यज्ञ शुरू
पावन दुर्लभ शारद यज्ञ को
हम भी करते रहेंगे गुरू
विघ्न भतेरे आऐं फिर भी हमने यज्ञ रचाना
हे यज्ञ देवता, संदेशा तुम ले जाना
जहाँ कहीं हो ऋषि संग गुरूवर उन तक उसे पहुँचाना
जहाँ पर भी हो ऋषि संग गुरूजी
बनी रहे हम पर छाया
रहे हमेशा हर तरह से
स्वस्थ निरोग हमारी काया
श्वासों के सरगम में हरदम हमें तुम्हें है पाना
हे यज्ञ देवता, संदेशा तुम ले जाना
जहाँ कहीं हो ऋषि संग गुरूवर उन तक उसे पहुँचाना
सारे मठ परिवार ने देखो
पावन यज्ञ है आज रचाया
आपका गान हरिश्चंद्र मुनी,
यतीन्द्र, जगत वर्मा, हेम सभी ने गाया
वीर, महावीर, सरस सरस्वती करे नमन तुम्हारा
हे यज्ञ देवता, संदेशा तुम ले जाना
जहाँ कहीं हो ऋषि संग गुरूवर उन तक उसे पहुँचाना।

यह अंक दयानन्द मठ चम्बा के सहयोग से प्रकाशित किया गया तथा
आगामी अंक आर्य वन्दना कोष के सौजन्य से प्रकाशित किया जाएगा।

अंक : १००वां विक्रमी सम्वत् २०७२ सृष्टि सम्वत् १६६०८५३११६ दिसम्बर २०१५

आभार व धन्यवाद पत्र

प्रिय आत्मीयजनो

कोटिशः धन्यवाद, आप सभी के परम सहयोग से, मंगलकामनाओं से और आशीर्वाद से, उस परम प्रभु की अपार अनुकम्पा से वार्षिक यज्ञ सहित दुर्लभ शारद यज्ञ बहुत ही भव्य रूप से सम्पन्न हो गया है। इसके लिए उस कृपालु प्रभु सहित आप सभी का भूरिशः धन्यवाद। पूज्य चरणों की छाया भी हम पर बनी रही। स्थूल शरीर के रूप में भले ही उनकी छाया हम पर नहीं रही पर समस्त दिव्यजनों, देवजनों, पितरों, ऋषियों, महर्षियों के साथ उनकी छाया बनी रही। पूज्य चरण व प्रिय ऋषि अपने सूक्ष्म शरीरों से यज्ञ वेदी में हरदम उपस्थित रहे, यह आभास प्रतिपल होता रहा। उन्हीं सब दिव्यजनों के कारण ही यह कठिनतम कार्य सहजता से सम्पन्न हो गया। एकांकी होते हुए भी सहयोगियों की कमी नहीं रही। कोई विघ्न नहीं रहा, कोई बाधा उपस्थित नहीं हुई। किसी चीज की कमी आड़े नहीं आई। किसी भी वस्तु का अभाव नहीं खला। मैं पूरे समय यज्ञ में ही बैठा रहा। सभी कार्य यन्त्रवत व्यवस्थित तरीके से चलते रहे। दूर दराज एवं विभिन्न स्थानों से आए याजकों ने, साधकों ने भरपूर आनन्द उठाया। इस यज्ञ में शामिल होने पर अपने सौभाग्य को सराहा। मैं भी आज तक जो आनन्द प्राप्त नहीं कर पाया, मैंने इस बार वह आनन्द प्राप्त किया, मैं तो धन्य–धन्य हो गया। शेष सारी व्यवस्थाएं मेरी धर्मपत्नी ने संभाले रखी, जिन्हें मैं पूज्य चरणों के होते हुए संभाला करता था। कामों में सहयोग करने के लिए हमारे स्नातक लोग, हमारे रिश्तेदार स्वतः ही आ गए थे। पूज्य स्वामी आर्यवेश जी सार्वदेशिक सभा के प्रधान भी आशीर्वाद देने पहुंचे थे। दीनानगर से आए ब्रह्मचारियों व आदर्श विद्यालय की छात्राओं ने ऋग्वेद की ऋचाओं का सुरीले स्वर में गायन करते हुए गिरि गहवरों को प्रपूरित किया। श्री हरिश्चन्द्र मुनी ने, दीनानगर से आए श्री प्रभु जी ने, हेमराज व मनोज शास्त्री के साथ–साथ विद्यालय की छात्राओं ने अपनी संगीत की स्वर लहरियों से वातावरण को सुरीला व मोहक बनाया।

सारांश यह है कि यज्ञ हर प्रकार से सफल रहा। पूज्य स्वामी जी के स्थान पर उन्हीं के शिष्य स्वामी सवितानन्द जी पूरे समय यज्ञ के ब्रह्मत्व का काम निभाते रहे, पूर्णाहुति के बाद ही यज्ञ से उठे। सम्पूर्ण कार्य के बाद इन्द्र देवता ने अर्धस्नान हेतु आधा घंटे तक पानी वर्षाया। आप सभी का एक बार पुनः धन्यवाद।

विनीत : आचार्य महावीर सिंह,
अध्यक्ष दयानन्द मठ चम्बा

आर्य वन्दना शुल्क : वार्षिक शुल्क : ₹100, द्विवार्षिक शुल्क : ₹ 160, त्रैवार्षिक शुल्क : ₹ 200
आप शुल्क हि. प्र. स्टेट को–आपरेटिव बैंक लिमिटेड, सुन्दरनगर शाखा (खाता संख्या : 32510115356 आर्य वन्दना) में भी जमा करवा सकते हैं।

मुख्य संरक्षक	: रोशन लाल बहल, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र., मोबाइल : 94180–71247
परामर्शदाता	: 1. रत्न लाल वैद्य, आर्य समाज मण्डी, हि. प्र. मोबाइल : 94184–60332
	2. सत्यपाल भटनागर, प्राचार्य, आर्य आदर्श विद्यालय, कुल्लू मोबाइल : 94591–05378
विधि सलाहकार	: प्रबोध चन्द सूद (एडवोकेट), प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र. मोबाइल : 94180–20633
सम्पादक	: कृष्ण चन्द आर्य, महर्षि दयानन्द मार्ग, आर्य समाज, सुन्दरनगर (खरीहड़ी), जिला मण्डी (हि. प्र.) पिन 175019 मोबाइल : 94182–79900
मुख्य प्रबन्ध–सम्पादक	: विनोद स्वरूप, कांगड़ा कालौनी, डा. कनैड, तह. सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि. प्र.) पिन 175019 मोबाइल : 94181–54988
प्रबन्ध–सम्पादक	: माया राम, गांव चुरढ़, सुन्दरनगर मोबाइल : 94184–71530
सह–सम्पादक	: 1. राजेन्द्र सूद, 106, ठाकुर भ्राता, लोअर बाजार, शिमला
	2. मनसा राम चौहान, आर्य समाज, अखाड़ा बाजार, कुल्लू मोबाइल : 94599–92215
मुद्रक	: प्राईम प्रिंटिंग प्रैस, शहीद नरेश कुमार चौक, सुन्दर नगर, (हि. प्र.) 175019
नोट	: लेखकीय विचारों से सम्पादकीय व प्रकाशकीय सहमति आवश्यक नहीं है।

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक कृष्ण चन्द आर्य ने हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए छपवाकर आर्य समाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, खरीहड़ी (सुन्दरनगर) से प्रकाशित किया।

सम्पादकीय

दिसम्बर मास के अंक के साथ आर्य वन्दना लगातार ९ वर्षों से अधिक प्रकाशित कर रहे हैं। इसे प्रकाशित करने के लिए मैं परम आदरणीय स्वर्गीय स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज जो इसी साल ईश्वरीय व्यवस्थान ७८ वर्ष की आयु में विलीन हो गए थे ने पत्रिका के संचालन हेतु २००६ में मुझे अधिकृत किया। आज १०० अंक पूरे हो चुके है। लगातार पत्रिका के प्रकाशन, प्रचार–प्रसार में अपनी ओर से संपादक मण्डल द्वारा कोई भी कमी नहीं रखी गई। यह अंक स्वामी सुमेधानन्द जी के चरणों में अर्पित करते हुए अत्यंत प्रसन्नता अनुभव कर रहे हैं। आज यद्यपि स्वामी जी शारीरिक रूप से हमारे बीच विद्यमान नहीं हैं क्योंकि इसी वर्ष उनका देहावसान हो गया था। उनके इस महा प्रयाण के कुछ मास पूर्व ३४ वर्ष के युवक ऋषि कुमार जी स्वामी जी के विचार में मठ संचालन करने वाले भावी कर्णाधार थे भी अल्पायु में ही संसार छोड़कर चले गए। इस महान् क्षति से उनके पिता श्री महावीर सिंह जी माता सरस्वती जी एवं परिवार सम्बंधियों का दुखी होना स्वभाविक ही था।

स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज जहाँ मधुमेह तथा रक्तचाप से पीड़ित थे। वे भी इस नश्वर संसार से कूच कर गए। आना–जाना यह संसार का अटल नियम है। लेकिन स्वामी जी महाराज ने आश्वस्त होकर जिस ऋषि कुमार के हाथों दयानन्द मठ चम्बा को चलाने संवारने का मन बना रखा था वह स्वामी जी की समस्त इच्छा आकांक्षा धरी की धरी रह गई। ऋषि कुमार भी ३४ वर्ष की अल्पायु में संसार को छोड़कर चले गए। श्री महावीर सिंह उनकी पत्नी श्रीमती सरस्वती देवी के कंधों पर मठ संचालन की समस्त जिम्मेदारी आ गई। आज स्वामी जी व ऋषि जी का जीवन सूर्य सदा के लिए अस्ताचल में चला गया है। लेकिन उनकी शिक्षा हमारे मार्ग को सदा प्रेरणा व आलोकित करती रहेगी। ये अंक दयानन्द मठ चम्बा के सौजन्य से प्रकाशित किया जा रहा है। श्री महावीर जी ने स्वामी सुमेधानन्द जी एवं ऋषिकुमार जी के जीवन की कुछ झांकियाँ यहाँ उपस्थित की जो निश्चित रूप से हमें प्रेरणा देती रहेगी। स्वामी जी महाराज की वेदों पर कट्टर आस्था थी। वह ऋषि दयानन्द के महान् भक्तों में से एक थे।

दैनिक हवन में उनका अटल विश्वास था। उन्होंने अपने गुरूकुल में साल भर चलने वाले शारद यज्ञ की परिपाटी चलाई। उनके जीवन से आयु पर्यन्त प्रेरणा लेते रहे। वे और भी कुछ कर सकते थे। लेकिन उनके जाने का समय आ गया था। दयानन्द मठ चम्बा को आलोकित कर गए। इस मठ में स्वामी जी के नेतृत्व में आँखों के निःशुल्क ऑपरेशन किए जाते रहे। आस–पास की जनता उसका भरपूर लाभ उठाती रहे। आगे चलकर उनके भक्त महावीर जी व सरस्वती जी उनके पद चिन्हों पर चल कर इस मंच के सजाने संवारने व आदर्श बनाने में भरपूर योगदान दे रहे हैं। लोगों का भरपूर स्नेह इन विभूतियों पर बना है। प्रभु अपनी व्यवस्था में इस पति पत्नी को स्वामी जी महाराज की शिक्षा के प्रचार–प्रसार करने की शक्ति प्रदान करे वे प्रतिकूल परिस्थिति में जब स्वामी जी व ऋषि जी उनको छोड़कर चले गए हैं अपने कर्त्तव्य पथ पर चलते रहें। प्रभु इन्हें शतायु करे। इस मठ का प्रचार हिमाचल के कोने–कोने में आलोकित करता रहे। आर्य वन्दना परिवार जिसके प्रमुख सम्पादक श्री विनोद स्वरूप व प्रबन्ध सम्पादक श्री माया राम जी मुख्य संरक्षक श्री रोशन लाल बहल एवं मुख्य परामर्श दाता श्री रत्न लाल वैद्य के कुशल नेतृत्व में शक्ति व सामर्थ्य के अनुसार कार्य कर रहे हैं। भविष्य में यह आर्य वन्दना पत्रिका हम सभी का पथ प्रदर्शक बनी रहेगी। मेरा पाठकों से अनुरोध है कि अपने सुविचारों की अमृतवर्षा यदा –कदा करते रहें। ताकि हम आर्य वन्दना घर–घर पहुँचाने में सक्षम बन सकें। ईश्वर सभी के जीवन में अपने सुन्दर विचारों की वर्षा करते रहें और हम वेदवाणी का रसास्वाद करते रहें। मैथली शरण गुप्त के इस वाक्यांश को साकार करते है :–

भूगोल का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला स्थल कहाँ फैला।
मनोहर गिरी हिमालय और गंगाजल कहा सम्पूर्ण देशी से
अधिक किस देश का उत्कर्ष है।
उसकी जो ऋषि भूमि है वह कौन भारत वर्ष है।

उन्होंने अपने विचारों को व्यक्त करते हुए आगे कहा :–

हाँ वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का सिरमौर है।
ऐसा पुरातन देश कोई विश्व में क्या और है ?
भगवान की भवभूतियों का पहले यह प्रथम भण्डार है
विधि ने किया नर सृष्टि का यहीं विस्तार है।

आर्य वन्दना परिवार में मुख्य प्रबन्धक संपादक श्री विनोद स्वरूप, प्रबंध संपादक श्री माया राम तथा इस पत्रिका के सौवें अंक पूर्ण होने पर अब इसे अन्य व्यक्तियों को सौंपना चाहते थे लेकिन श्री रोशन लाल बहल मुख्य संरक्षक के आग्रह और आदेश पर हमने इसे कुछ और समय तक चलाने का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। अब हर मास की ६ तारीख तक यह पत्रिका पाठकों तक पहुंचा दी जायेगी। हम आप सभी का सहयोग और सद्भावना का आभार व्यक्त और धन्यवाद करते हैं। प्रभु आप को सुख–शांति और समृद्धि प्रदान करें। ऋषिवर दयानन्द के उद्यान की आर्य समाज रूपी यह वाटिका पलवित, पुष्पित और फलित होती रहे तथा सभी आर्यजन इसकी शीतल छाया में वैठ कर वेदामृत का पान करते रहें।

–कृष्ण चन्द आर्य

ओ३म्

और सूरज डूब गया

प्रियजनों कमान से निकला तीर, जुबान से निकली वाणी, गया हुआ समय जिस प्रकार कभी वापिस नहीं लौटते ठीक उसी प्रकार से अस्ताचल पर्वत पर आरूढ़ भगवान भास्कर भी वापिस नहीं लौटता, अतः उसे अस्त होना ही है, यह सुनिश्चित है। यह बात अलग है कि नया सवेरा होगा और सूर्य पुनः उदित होगा पर इतने अंतराल में अंधेरा तो आ गया। भयानक गहन रात्रि तो उपस्थित हो गयी। पूज्य स्वामी जी महाराज के जीवन रूपी सूर्य ने भी अस्ताचल पर्वत का अवलम्बन कर लिया था। यानि उस अवस्था को प्राप्त कर लिया था जहाँ से फिर वापिस लौटना मुश्किल था। अतः उनके जीवन रूपी सूर्य ने डूबना ही था वह डूब गया। ५ अगस्त, २०१५ को रात्रि को पौने दस बजे वे हम सब को छोड़कर चले गए। हमारी आँखों से हमेशा–हमेशा के लिए ओझल हो गए। हमारे हृदयों में तो उनका अक्ष उनकी स्मृति जीवन पर्यन्त बनी रहेगी। समुद्रतुल्य अंतस्थल से उठने वाले उनकी स्मृतियों रूपी उन्नत तंरगों के वाष्पों को प्रवाहित होने के लिए समुचित स्थान मिले। इसलिए वे अब आंखों के विषय नहीं रहे। यह आंखें उन्हें अब कभी नहीं देख पाएंगी। हां उनकी याद में सजल तो रहेंगी। मुक्ताकणों को लुढ़काती तो रहेंगी। अंधेरे में उन्हें टटोलती रहेंगी, खोजती रहेंगी पर अपने मनोरथ में कभी सफल नहीं होगी। प्यासा हिरण मृगतृष्णा के पीछे दौड़ता जाता है, भागता जाता है। जिसे वह जल समझ पीने के लिए दौड़ता जा रहा है वह जल तो है नहीं वह तो मृगतृष्णा है। नादान हिरण भागता–भागता थक जाता है, टूट जाता है, प्यास बुझने के बजाय बढ़ती चली जाती है। पानी ने मिलना नहीं था तो नहीं मिला। ठीक इसी प्रकार हमारी आंखों में स्वामी जी को देखने की जो प्यास है अब कभी नहीं बुझ पाएगी। उनके कदमों की चाप अब कभी नहीं सुनाई देगी। स्वामी जी आ रहे हैं का यह भम्र अब कभी दूर नहीं हो पाएगा। गीतकार का इसी प्रकार से सम्बन्धित कितना सुन्दर गीत है :–

कौन आएगा इधर जिसकी बाट जौहें हम
जिनकी आहटें सुने जाने किसके थे कदम

प्रिय ऋषि के चले जाने के बाद रात्रि को सोते समय जब उसकी याद आती जो पूज्य चरण–पूज्य स्वामी जी इसी पंक्ति को गुनगुनाकर मौन हो जाते, अनन्त में खो जाते थे। सम्भवतः उसकी प्रतीक्षा करते–करते थक गये थे और प्रतीक्षा नहीं कर पाए और उसकी जुदाई को सहन नहीं कर पाए इसीलिए उसके पास चले गये। उन दिव्य लोकों में चले गए जहाँ उनका प्यारा, उनका लाडला, उनका दुलारा, हम सबकी आंखों का तारा उनके स्वागत के लिए दिव्यजनों के साथ खड़ा था। पलकें बिछाए उनके आगमन की प्रतीक्षा में था। पूज्य चरण इस लोक से परलोक में पदार्पण करें तो वहीं उन्हें कोई असुविधा न हो। इसीलिए तो वह वहाँ पहले चला गया। हम लोग भी शारद यज्ञ भव्यतम तरीके से उनके सामने सम्पन्न कर उन्हें संतृप्त कर यहाँ से विदा करना चाहते थे। इसीलिए आओ श्राद्ध व तर्पण करें शीर्षक से एक शारद यज्ञ सम्बंधी पत्र मैंने आप सभी को संप्रेषित किया था। पूज्य स्वामी जी उस शारद यज्ञ की भी प्रतीक्षा नहीं कर पाए। उससे पूर्व ही अपने लाडले के पास चले गए। सम्भवतः उन्हें विश्वास हो गया था कि मेरे द्वारा आंरभ किए मेरे कार्यों को मेरे आत्मीयजन बखूबी आगे बढ़ाऐंगे। इस शारद यज्ञ को भी पूर्ववत जारी रखेंगे। इसीलिए वे उससे पूर्व ही चले गऐ। उन दिव्यलोकों को चले गए जहाँ पर दिव्यात्माएं निवास करती हैं। जहाँ से दिव्यात्माएं इस लोक में आती तो हैं पर वहीं पर आती हैं जहाँ पर उनके लिए अनुकूल वातावरण हो। अनुकूल माहौल हो, जहाँ पर उन्हें दिव्य रस व दिव्य गंध के रूप में भोग उपस्थित किए जा रहे हों। जिन्हें ग्रहण करके उनके अनुकूल वातावरण व भोज्य का सृजन करने वालों को अपने अमोघ आशीर्वादों से अभिसिंचित कर आप्लावित कर, भरपूर कर पुनः उन दिव्यलोकों को चले जाते हैं जहाँ से अपने प्रियजनों पर नजरें गड़ाए रखते हैं और उनके रोग, शोक, ताप–संताप को दूर कर उन्हें हर प्रकार के सुख–सौभाग्यों से भरपूर करते हैं।

प्रियजनों आना–जाना तो संसार का ध्रुव सत्य है। गीता में श्री कृष्ण जी कहते हैं :–

'जातस्य हि ध्रुवोमृत्युः ध्रुवं जन्म मृतस्य च'

अर्थात जो संसार में आया है उसे तो जाना ही है। चाहे राजा हो या रंक हो, गृहस्थी हो या साधु हो, बालक हो या बूढ़ा हो, स्त्री हो या पुरूष हो। इस नियम से सब बंधे हुए हैं। इसीलिए समय आ गया था स्वामी जी भी चले गए।

हमारा कर्तव्य : पूज्य चरणों के जाने के बाद हमारा, उनके अनुयायियों का, उनके प्रियजनों का उनसे प्रीति रखने वालों का कर्तव्य है कि उनके प्रिय कार्यों को जारी रखें।

उनके अनुसार आचरण व व्यवहार रखें। जिनसे उन्हें संतुष्टि हो उनकी तृप्ती हो। मनु जी महाराज ने आदेश दिया है

तयोर्नित्यम् प्रियम् कुर्याद
आचार्यस्य च सर्वदा

...ष्टेषुः

तपः सर्वं समाप्यते

अर्थात्—माता—पिता व आचार्य का प्रिय करने में हमेशा ही तत्पर रहें। लेकिन आचार्य का प्रिय यानि आचार्य को जो अत्यधिक प्रिय हो ऐसे कार्य को करने में हर समय तैयार रहना चाहिए। मनु जी के इस आदेश को मानते हुए अब हम पूज्य चरणों का क्या प्रिय कार्य करें, कौन—सा कार्य उन्हें प्रिय था। इसका उत्तर है यज्ञ कार्य उन्हें प्रिय थे। उन्हीं यज्ञों को कर हम उनका प्रिय कार्य करें।

दुर्लभ शरद यज्ञ : प्रियजनों वर्तमान में उपस्थित परिस्थितिवश कुछ हितेशी जन दुर्लभ शारद यज्ञ को विराम देने के लिए कह रहे हैं। इस वर्ष स्थगित करने को कह रहे हैं पर मेरा मन नहीं मान रहा है। पूज्य चरण इसे हर परिस्थिति में जारी रखे हुए थे। हमें भी इसे जारी रखना है। दिवंगत आत्माओं का तर्पण भी तो करना है। क्या उन्हें भूखे ही रखना है, अतृप्त ही रखना है। नहीं नहीं उन्हें हमने तृप्त करना है, संतुष्ट करना है और वह इन यज्ञों से ही संभव है। गीता में श्री कृष्ण कहते हैं :—

यज्ञे तपसि दानेचस्थितिः सदिति चोच्यते

कर्मचैवतदर्थीयं सदित्येनाभिधयिते।।

यज्ञ, तप और दान इन तीनों कर्मों को करने की जो प्रवृति है वह श्रेष्ठ प्रवृति है। ईश्वर के प्रति अपने आप को समर्पित करने की प्रवृति है। परमात्मा के प्रति समर्पित होकर किया गया कर्म भी श्रेष्ठ है।

अतः यह कर्म भी श्रेष्ठ हैं इसे अवश्य करना है। आगे श्री कृष्ण जी कहते हैं :—

यज्ञ, दान तपः कर्म न त्याज्यम् कार्यमेवतत्।

यज्ञो दान तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्।।

यज्ञ, दान और तप इन तीनों कर्मों को मनुष्य को चाहिए कि कभी न छोड़े। इन्हें निरन्तर करे क्योंकि यह तीनों कर्म मनुष्य को पूत और पवित्र करने वाले हैं। अतः मेरे प्रियजनों आओ हम सब मिलकर पूज्य स्वामी जी महाराज के द्वारा आरम्भ किए गए इस शारद यज्ञ का अनुष्ठान जारी रखते हुए जहाँ पूत और पवित्र बने वहीं पूज्य चरणों का तर्पण भी करें और दिव्यात्माओं को भी तृप्त करें। इससे बड़ा उत्तम कर्म इससे अच्छा श्रेष्ठ कर्म और क्या हो सकता है जिसके करने से इह लोक में समस्त प्राणियों का कल्याण हो और परलोक में दिव्य लोकों में निवास करने वाले देवजन, पितृजन व समस्त मुक्त आत्माओं का भी तर्पण हो, तृप्ती हो। जल का शोधन हो, वायु पूत और पवित्र हो। इस कर्म को छोड़ना नहीं चाहिए। प्रियजनों आओ हम सब मिलकर इसे सम्पन्न करें। मिलकर कार्य करने में जो आनन्द मिलता है वह अकेले करने में नहीं मिलता। वेद आदेश देता है :—

"सह नो अवतु सह नो भुनक्तु सहवीर्यं करवावहे

तेजस्विनभव धीतमस्तु मा विद्विषावहै

संगच्छध्वं सं वदध्यं सं वो मनांसि जातनम्

देवाभागम् यथा पूर्वे से जनानामुयासते"

प्रिय बंधुओं साथ—साथ खाने में जो मजा है वह अकेले खाने में कहाँ। समूह में चलने पर रास्ता आसान हो जाता है। अकेले में आसान यात्रा भी जटिल लगती है। समूह में बोलने पर नदी—नाले, वन—उपवन, पर्वत सब हिल जाते हैं। एक अकेले की आवाज़ पत्ते को भी नहीं हिला सकती। वेद भगवान आदेश देते हैं।

सहस्त्रं साकमर्चत : हे मनुष्यो तुम सहस्त्रों—सहस्त्रों जन मिलकर पूजा करो यागादि कर्मों को करो अधिकस्यधिकम् फलम् जितने अधिक लोग मिलकर इन कर्मों को करेंगे उतना अधिक लाभ प्राप्त होगा। इसीलिए मैं आप सबका आवाहन् करता हूँ—हे प्रियजनों आओ इस यज्ञ में भाग लो। प्रचुर मात्रा में सहयोग राशियाँ अन्न के रूप में, धन के रूप में, जन के रूप में सम्पन्न कर पुण्य के भागी बनो, यज्ञमान बनो, अंशकालिक, पूर्णकालिक सामर्थ्यानुसार यज्ञमान बनकर अपने जीवन में मैं भी दुर्लभ शारद यज्ञ यजमान बना था। इस गौरमयी पंक्ति को अंकित करो। ईश्वर सबका कल्याण करेंगे।

<u>यजमानों के लिए कर्त्तव्य व देय</u>

अंशकालिक यजमान १ पीपा घृत, पूर्णकालिक यजमान ५ पीपे घृत के शेष दक्षिणा अथवा अन्य प्रकार के सहयोग स्वेच्छा से ह्रदय की आवाज पर कोई अनिवार्यता नहीं।

समय सारणी : १० से १२ अक्तूबर तक

प्रातः ६ बजे से ६ बजे तक यज्ञ व सत्संग,

सायं ४ बजे से ७ बजे तक यज्ञ व सत्संग,

१२ अक्तूबर को सायंकाल यज्ञ की पूर्णाहुति।

<u>दुर्लभ शारद यज्ञ</u>

१३ अक्तूबर २०१५ को प्रातः ६.३० बजे से,

१४ अक्तूबर २०१५ को प्रातः ६ बजे पूर्णाहुति। उत्साही, उदार चेता व्यक्ति, सामग्री अथवा घृत, दक्षिणा, लंगर इनमें से किसी एक—एक का पूर्ण भार भी वहन कर सकता। यज्ञ में अवश्य भाग लें, भारी संख्या में भाग लें।

विनीत : श्री सुरेन्द्र भारद्वाज (सलाहकार व संयोजक), आचार्य महावीर सिंह (अध्यक्ष), श्रीमती बृजबाला/श्रीमती करूणा आर्या (प्राचार्य/उप प्राचार्या), श्री सुरेश कुमार जी (कोषाध्यक्ष) एवं प्रबंधक समिति दयानंद मठ चम्बा (हि.प्र.)

ओ३म्

पूज्य स्वामी जी व शारद यज्ञ

ऋग्वेद संसार की सबसे प्राचीनपुस्तक है, इस बात को सभी मानते हैं, उसके समय न अवधि के विषय में विमति तो हो सकती है, पर प्राचीनता के विषय में दुनिया के सभी विद्वानों ने इसकी प्राचीनता को सर्वसम्मति से स्वीकारा है। वेद ईश्वरीय वाणी है, ऋषि ने भी आर्य समाज के प्रथम नियम में लिखा है, सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदिमूल परमेश्वर है, वेद उस परमेश्वर की वाणी है अतः वेद में जो भी कहा गया है। वह ईश्वर के द्वारा कहा गया, जो आदेश दिया गया वह ईश्वर के द्वारा गया आदेश है, यह बात अलग है कि स्वार्थी लोगों ने स्वार्थ के वशीभूत हो, भारतीय संस्कृति की छवि को विकृतरूप से प्रस्तुत करने के लिए वेद मंत्रों की व्याख्या विकृत रूप से की पर महर्षि दयानन्द जी महाराज की महान अनुकम्पा से वेदों का सही स्वरूप व वेद मंत्रों की सही व्याख्या जन साधारण के सामने आयी। उन्हीं के ही अनुसार उनके अनुयायियों के द्वारा भी उनके द्वारा शेष शिष्य भाग की व्याख्याऐं की गयी। आधार ऋषिवर बना गए। तरीका भी प्रस्तुत कर गए अतः उत्तर जीवियों के लिए उत्तर जीवी विद्वानों के लिए वेद की व्याख्या करना आसान हो गया। ऋग्वेद के सातवें मण्डल के छ्यासठवें सूक्त के ग्यारहवें मंत्र के द्वारा आदिष्ट दुर्लभ शारद यज्ञ का ईश्वर के आदेश को पूज्य स्वामी जी ने शिरोधार्य किया उस यज्ञ को प्रतिवर्ष करने का शंकल्प लिया अपने जीवन में किए जाने वाले दीर्घ समीप यज्ञों की कड़ी में शारद यज्ञ के रूप में एक कड़ी और जोड़ दी जोकि विशिष्ट जनों के गले की फांस बन गयी। यह यज्ञ उन्हें रुचिकर नहीं लगा। किसी ने स्वामी जी को पाखण्ड का चोला पहनाया तो किसी ने उन्हें जगराते वाला बाबा की उपाधीर से विभूषित किया। इनमें से किसी ने भी स्वामी जी के द्वारा अपने हर वर्ष छपने वाले निमन्त्रण पत्रों में वेद के मण्डल, सूक्त व मंत्र की संख्या दिए जाने के बाद भी वेद को उठाकर देखने की पढ़ने की मंत्र की व्याख्या पर विचारने की जरूरत नही समझी। उन्हें तो बस मुखरूपी तरकश से दुर्वचनों रुपी वाणों से प्रहार करने के लिए एक तारगेट मिल गया था। बस फिर क्या था निकलने लगे एक से एक जहरीले तारे जोकि उस तपस्वी महान साधक पर निष्प्रभावी होकर गिरते गए। साधक अपनी साधना में लगा रहा शिव अपनी निर्विप्तभाव से अपनी धूनी रमाता रहा अपनी भक्ति में लगा रहा। देवों को तृप्त करता रहा। ईश्वर के कार्य को अपना भी प्रिय कार्य बना निरन्तर निष्ठा से करवाता। यज्ञों में विशेष कर शारद यज्ञ स्वामी जी के नाम के साथ ऐसे ही जुड़ गया है जैसे गंगा के साथ भगीरथ का नाम जुड़ गया है, यही यज्ञ स्वामी जी को दिव्य लोकों को भी ले गए।

पूण्य स्वामी जी के बाद मैंने भी उनके शंकल्पों को जारी रखने प्रतिवद्धता जताई। इस विषय के प्रपत्र मैनें सभी आत्मीयजनों के भेजे तो एक आचार्य प्रवर का सहानुभूति वाला, पत्र मुझे प्राप्त हुआ। जिसमें जो कुछ लिखा वह मैं आप सबके सामने रखकर उसका उत्तर अपनी बुद्धि के आधार पर लिखकर रहा हूँ, पत्र उन्हें लिख रहा था लम्बा हो गया तो उसे लेख का विषय बना–उन्हें संक्षिप्त में धन्यवाद सहित उत्तर दे दिया है।

श्री महावीर जी

सप्रेम नमस्ते प्रभो कृप्पा शमिह तमत्यञ्चाशासे, प्रथम २० अग. आर्यनीति से स्वामी जी के देहान्त का वृत अवगत हुआ। २२ को आर्यमर्यादा में श्रद्धांजली समाचार अतः संवेदना–संवेदना–संवेदना।

हाँ उत्तराधिकार पर शुभकामना आपका आर्य मार्यादा में मास पूर्व यज्ञ का उत्साह पूर्ण लेख पढा अतः–निष्कर्ष–यज्ञ में अत्यधिक बैठ स्वामी जी ने स्वास्थ्य विभाग अतः–युक्त उपयुक्त का पालन हो। तभी गीता–युक्ताहार–लगातार यज्ञ चलाना अव्यवहारिक है। मठ चम्बा में भी मैंने बहुत पहले बात की थी। महर्षि ने शास्त्रीय यज्ञों का जटिल ..... यज्ञ, अग्निहोत्र में समेटा है। एक घंटाभर प्रातः सायं का विधान किया है–सांर ततो ग्राहस्य पास्य फल्गु यही व्यवहारिक सरलहै, सौदा घाटे का स्वामी जी का स्वास्थ्य संदेश देता है–सभ्य तो। अतः विचारें दिन में दो बार दो तीन घंटे की बैठक पर्याप्त है।

पुनः संवेदना, शुभकामना, सभी को नमन स्मरण।

पूर्वोक्त विषय में मेरा मन्तव्य–पूज्य स्वामी जी महाराज सन्यास की दीक्षा लेने के बाद एकांतवास के लिए निकल गए थे। जहाँ तीन वर्षों तक १८–१८ घंटे की समाधि पूर्वक भी की गहन साधना करते रहे। अभ्यस्त साधक को लम्बे–लम्बे बैठकों का दुःस्प्रभाव नहीं होता। इसीलिए योग साधना की प्रथम सीढ़ी भी तो आसन ही है। आसन जिस साधक का सिद्ध हो गया वह लम्बी–लम्बी बैठकें लगाने में सक्षम होता है। योगीजन आसन के सिद्ध होने पर दीर्घ काल तक समाधिस्थ रहते है। दूर क्यों जाए महर्षि इसके प्रमाण है रही शरीर के जर्जरता की। इस विषय में उन्हें पूर्वज्ञान था। गृह त्याग के बाद उनके माता–पिता को उनके कारण जो घोर कष्ट हुआ। उसका परिणाम मुझे भोगना पड़ेगा मेरा अन्त भी कष्टकारी होगा। इस बात का उल्लेख वे प्रायः किया करते

थे और उनकी यह बात अन्ततः सत्य सिद्ध हुयी। हमारे द्वारा हर प्रकार से सुरक्षा दिए जाने के बाद भी उन्हें अन्त में काफी कष्ट उठाना पड़ा जिसका इलाज न डाक्टरों के पास था और न ही हमारे पास उसके प्रतिकार की क्षमता थी। हम तो परवश हो किंकर्तव्य विमूढ़ता की स्थिति में देख ही सकते थे कुछ कर नही सकते थे। पूर्वकृत कर्मों का फल मनुष्य को हर हाल में भोगने ही पड़ते है। स्वामी जी स्थिति प्रत्यक्ष रूप में संदेश दे रही थी।

शयानमनुरोते हि तिष्ठन्तमन तिष्ठति।
अनुधावति धावन्तम् कर्म पूर्व कृतम नरः।।

मनुष्य के कर्म उसके साथ ही सोते है, उसके बैठने पर बैठ जाते है, सके दौड़ने पर उसके साथ दौड़ते है, अर्थात् हर स्थिति मैं उसके साथ ही रहते हैं, कभी साथ नहीं छोड़ते। कर्मों की प्रस्फुटिता और सघन साधना दीर्घकालिक अनुष्ठान यज्ञयागदि, यह दोनों अलग–अलग पहलू हैं। एक कृतकर्मो की परिणति है। तो दूसरों कर्तव्यों का निर्वहन इन दोनों को एक ही तराजू पर तोलने पर मनुष्य अपने कर्तव्यों की तिलांजली दे बैठेगा, कर्तव्यों से विमुख हो जाएगा। गीता में श्री कृष्ण जी कहते है :

यज्ञ दान तपः कर्म न त्याज्यम कार्यमेवेतद्
यज्ञोदान तपश्चैव पावनानिमनीषिणाम्।।

यज्ञ, दान और तप यह तीनों ही कर्म मनुष्य को पवित्र करने वाले है भव सागर से पार करने वाले है। अतः मनुष्यों को चाहिए कि इन तीनों कर्मों को अवश्य करे इन्हें कभी न छोड़े पूज्य स्वामी जी महाराज इन कर्मों को पूरी श्रद्धा व निष्ठा से करते रहे अतः इनसे उनका स्वास्थ्य जीर्ण शीर्ण कैसे हो सकता है, यह सब जीर्णता व शीर्णता के कारण कैसे हो सकते हैं। शरीर की स्थिति के लिए प्रकृति कारण है, अगर एक क्षण के लिए मान भी लेते है कि यह भी कारण है तो साधन होता ही साध्य की प्राप्ति के लिए है, परमपिता परमेश्वर ने भी तो जब यह शरीर दिया तो साथ ही आदेश दिया कि हे सुत यह शरीर तुम्हें सजाने संवारने के लिए नहीं दिया। 'इयं ते यज्ञियातनः' इस शरीर के द्वारा तुमने यज्ञादि श्रेष्ठ कर्म करने है, और अगर श्रेष्ठ कर्मों को करते–करते यदि यह शरीर नष्ट भी हो जाता है, तो इससे श्रेयस्कर क्या हो सकता है। श्री कृष्ण गीता में कहते है।

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा का मोक्ष सि महिम

इस कर्म क्षेत्र में अपने कर्तव्यकर्मों को करते–करते यदि मृत्यु उपस्थित हो जाती है तो दिव्यलोकों में स्थान मिलेगा और यदि जीवन बना रहता है तो सद्वृति को धारण करता हुआ सुख व शांति का उपभोग करेगा।

यज्ञे तपासिदाने च स्थिति सदिविचोच्यते
कर्म चैवतदर्थीयं सदिव्येवाभिधीयते।

यज्ञ, तप और दान में मनुष्य की वृति को सद्वृति कहते और इसी को निमित्त से किया गया कर्म को भी सद्कर्म क है। अतः स्वामी जी महाराज की वृति भी हमेशा ही उत्तम ब रही। गिरते स्वास्थ्य से भी उन्हें, नींद भी ठीक आती रात्री को बहुत बार वाथरूम के लिए उठने के बाद भी बिस पर पड़ते ही उन्हें नींद तत्तक्षण आ जाती। प्रातः समय उठते स्नानादि से निवृत हो ध्यान भी लगाते। जब सहारे अन्दर बाहर ले जाने की स्थिति आ गयी तब भी जितनी तक बैठ सकते कुर्सी में बैठे भी ध्यान लगा लेते। विस्तर पड़े रहने की स्थिति मैं भी ऊँचे–ऊँचे विचार ऊँचे–ऊ संकल्प ही उनके मानस पटल पर उपजते रहते, कभी–क तो हमारे सामने कहते आज स्वप्न में दिव्य लोकों में देवज ऋषियों महर्षियों के साथ वार्ता करने में लगा। कभी–क समुद्र के किनारे रथ में सवार श्री कृष्ण जी मुझे देवलोक ले जाने के लिए आए थे कहते थे अंतिम समय पर भी दिन पूर्व बाहर वर्षीय सत्संग सम व यज्ञ का शंकल्प ले लि था। अपनी डायरी में उन्होंने उसका बजट भी बनाकर तैर कर लिया था। श्री पूनम सूरी आदि का जब भी फोन आ अथवा कोई मिलने आता तो उन्हें यही कहते कि मैं थो ठीक हो जाऊं हमने मिलकर बहुत काम करने है, वेदव पर उनकी अगाध निष्ठा थी। तद्विहित यज्ञ कर्म उन्हें ब प्रिय थे। यज्ञ श्रृष्टि को आधार है। यज्ञ से प्राणी मात्र कल्याण होता है तो फिर यज्ञ करने वाले का अकल्याण क हो सकता है। यज्ञ करने वाला याजक उस कल्याण अछूता कैसे रह सकता है, रही लम्बे सत्रों की; वे महर्षि इसके विषय में कहीं नहीं लिखा तो खण्डन भी तो न किया, ऋग्वेद के संभाग का भाष्य करने के लिए ऋषिवर जीवन नहीं रहा। जिसमें शारद यज्ञ विषय का मंत्र अंकि है, शारद यज्ञ का वर्णन है, अन्यथा ऋषिवर इसके विषय अवश्य अपना गन्तव्य देते। साल में एक बार दिन रात यह यज्ञ किया जाता है। जो सौभाग्यशाली इस यज्ञ को न सकते हैं करे, जो नहीं कर सकते हैं न करे इसके लि परमात्मा ने किसी को वाध्य नहीं किया। ईश्वर ने इस य को करने का उपदेश दिया है, उसकी महत्ता बताई है, क करने में तो मनुष्य स्वतन्त्र है, कर्म को करना न करना उस अपने अधिकार में है, स्वामी जी महाराज से कुछ लोग न ह हैं, जो अपने सम्पूर्ण जीवन को यज्ञों के लिए समर्पित कर है, और कुछ लोग ऊहापोह में ही फंसे रहते है, विवेचना क में ही समय गवां देते है। न करने को वे दैनिक यज्ञ भी न कर पाते, जन साधारण की तो बात और है, यज्ञों पर ल चोड़े प्रवचन देने वाले यहाँ उदासीन देखे गए है, दैनिक य

की प्रकृया जो ऋषिवर ने लिखी है अथवा बृहद्पस की प्रकृया विशेष अवसरों के लिए ऋषिवर ने जो लिखी है; जोकि घंटे भर से ऊपर की प्रकृया नहीं है वह दैनिक यज्ञाथियों के लिए लिखी है, पारिवारिक यज्ञों के लिए लिखी है साथ ही महर्षि ने पञ्चयज्ञ महाविधि में यह भी लिखा है कि जो इससे अधिक जितने समय तक चाहो स्वाहा पूर्वक गायत्री मंत्र से भी यज्ञ कर सकते हो। एवं प्रातः सायं संन्ध्योपासन करणानन्तमेतैर्मन्त्रैः होमम् कृत्वा अग्रे याव दिच्छातावद् गायमी मन्मेण स्वाहान्तेन होमम् कुर्यात् यह वाक्य जन साधारण के लिए लिखा गया है। जो वेद का पारायण नहीं कर सकते उनके लिए यह आसान तरीका यज्ञ का बता दिया। दीर्घकालिक यज्ञों का ही प्रतिवादन ऋषि के इस वाक्य से होता न कि खण्डन यज्ञों से देवजन पितृजन तृप्त होते है पर्यावरण का शोधन होता है। रोग शोक के कीटाणु दूर होते है। एक स्वच्छ व निर्मल वातावरण का सृजन होता है। यह सर्वविदित है, तो यह मास अर्धमास में कहीं–कहीं विर ले स्थानों पर छोटे स्तर पर किए जाने वाले यज्ञों से यह संभव नहीं है, इसके लिए वृहत्तर यज्ञों का, लम्बे–लम्बे दीर्घ सपित यज्ञों का आयोजन प्रचुर मात्रा में होना ही चाहिए जिसमें प्रचुर मात्रा में घृत की धाराऐं प्रवाहित की जाऐं। उत्तम–उत्तम पदार्थो से निर्मित, पौष्टिक रोगनाशक सुगंधित व मिष्ठान से युक्त हव्य उनाहूत किया जाय। जिनके दिव्य रस व दिव्य गंध से तृप्त होकर देवजन व पितृजन अचल सुख सौभाग्यों से हमारी झोलियाँ भर दें। द्यूलोक अन्तरिक्ष लोग यज्ञ के धूम से प्रपूरित हो सुख व शान्ति की वर्षा करेंगे। तब हमारा ओ३म् शांतिः–"मन्य को पढ़ना भी सार्थक होगा। पूज्य स्वामी जी महाराज का इस ओर प्रयास रहा। अपने सामर्थ्य के अनुसार उन्होंने इसमें अपनी अहम भूमिका अभिनीत की, अपने भक्तों को अपने शिष्यों को अपने प्रियजनों को उन्होंने इस ओर प्रेरित किया। उनके द्वारा समर्पित राशि को इस कार्य में लगाकर उनकी कमाई को धन्य किया। असहिष्णु लोगों ने नाना प्रकार के आरोप भी लगाए, पर वे टस से मस नहीं हुए निन्दन्तु नीति निपुणः" के अनुसार उन्होंने जो मार्ग *चयनित कर लिया। उस पर वे जीवन के अंतीमक्षणों तक* अडिग रहे। किसी ने तो कहा कि पैसा कमाने का धन्धा बना लिया है। कितना पैसा स्वामी जी ने इसमें कमा लिया। कितना पैसा उन्होंने एकत्रित किया। यह उन लोगों से पूछो *जिन्होंने प्रिय ऋषि व पूज्य स्वामी जी के इलाज पर सारा व्यय किया। संस्था के पास उनके इलाज के लिए पैसे नहीं* थे। इतिहास बताता है, महाराजा रघु सर्वहुत यज्ञ किया करते थे। जिसमें वे अपने द्वारा एकत्रित दौलत को सम्पूर्ण रूप से दान कर देते थे। पूज्य स्वामी जी भी उसी इतिहास को इस कलिकाल में दोहराते हुए जो राशियाँ यज्ञ के निमित्त से एकत्रित होती। श्रद्धालुजन श्री चरणों मैं समर्पित करते उन्हें यज्ञ का भाग बनाते ही बनाते, जो पल्ले में हाता उसे भी यज्ञ में समर्पित कर देते। पुनः वर्ष भर मठ की गतिविधियों को आगे चलाने के लिए संघर्षरत हो जाते। कौत्स ऋषि गुरू को दक्षिणा में देने के लिए सोलह करोड़ स्वर्णमुद्राऐं मांगने के लिए जब महाराजा रघु के पास आते है। महाराजा रघु ने सर्बहुत यज्ञ में अपनी सारी धन राशि दान कर दी थी। अतः मिट्टी के बर्तनों में खाना खा रहे थे। ब्रह्मचारी कौत्स यह देख निराश होकर लौटने लगे तो, आग्रह पूर्वक उन्हें ठहराया। बार–बार पूछने पर उनके आने का कारण जाना तो अपने कोषाध्यक्ष से कोषागारों की स्थिति जानी, तो उन्हें खाली पाया। उन्होंने तुरन्त कुवेर को संदेश भेजा। कुवेर ने संदेश पाते ही रघु के सभी कोषागार धन से भर दिए। पूज्य स्वामी जी के पास भी कोई सहायतार्थी बेटी की शादी के लिए आता। अथवा कोई चिकित्सार्थी अथवा और किसी भी प्रकार का अभ्यर्थी आता तो स्वामी जी, फोन उटाकर भाई जनक को अथवा भाई प्रवीण जी को या भाई श्री अयोध्या प्रकाश मेहरा को जोकि अब स्वामी जी के साथ ही दिवंगत हो गए, आदेश देते और वे वांच्छित राशि भेज देते। जिसे स्वामी जी अभ्यर्थी को समर्पित कर देते। महाराजा दिलीप के विषय में कालिदास जी लिखते है।

'त्यागाय सभृतार्थानाम सत्याय मितभाषिणाय'

अर्थात् : महाराजा दिलीप के वंश त्याग करने के लिए ही धन संग्रहति करते थे। पूज्य स्वामी जी दान तो लेते थे। पर उसे अपने पास नही रखते थे। वितेष्णामया परित्यक्ता संचास की इस प्रतिज्ञा को उन्होंने अंतीम क्षणों तक निभाया। लोकेष्णा मया परिव्यक्ता इस प्रतिज्ञा को भी उन्होंने झूठी नहीं होने दी। वितण्डा वादियों ने, धन के लिए प्रतिष्ठा के लिए यह सब ड्रामेवाजियाँ कर रहे हैं कहा। कईयों ने तो जगराते वाला बाबा की उपाधि से भी उन्हें नवाजा। दिल की कालिख हर प्रकार से बाहर निकाली पर, रागद्वेष की मस्ती रमाए। इस भोले बाबा के सिर से ज्ञान गंगा बहती गयी। इसकी धूनी जलती रही। आक्षेप प्रत्याक्षेप रूपी पतंगे आते गए। शंकर की धूनी की लौ पर वे सब समाप्त होते गए। शिव के ललाट से निकलने वाली चन्द्रकिरणें शीतलता विखेरती रही और अन्ततः महाकाल रूपी गहन अमावस्या के आंचल में अपने आपको विलीन भी कर गयी।

शंकर अपने अलौकिक अलंकरणों के साथ दिव्य लोकों को चले गए हो उनके द्वारा प्रज्वलित धूनि शेष रह गयी है। अब उस धूनी को प्रज्वलित रखना उसके गणों का काम है। धूनी के साथ शिव का नाम अमर है। शिव को धूनी से अलग

नहीं कर सकते।

धूनी रमाने से जैसे सीधे शिव की धूनी का आभास होता है, [illegible]ोता है। ऐसे ही शारद यज्ञ से उस द्विव्य पुरुष का ज्ञान समरण स्वतः ही हो जाएगा। क्योंकि इसके साथ उनका अटूट सम्बंध है। अतः गणों के द्वारा यानि हम अनुयायियों के द्वारा उस धूनी को यज्ञ विशेष को जलाए रखना जारी रखना उन दिव्यात्माओं की यादों को संस्मरणों को जीवित रखना है। इस एक यज्ञ धर्म से हमारे बहुत सारे कर्तव्य कर्म सिंह हो रहे है। अतः इससे निर्णय श्रेष्ठ कर्म और क्या हो सकता है। यह सौदा घाटे का है या बाधे का स्वयं निर्णय करें।

ओ३म्

दुर्लभ शारद यज्ञ का अनुष्ठान

गत पन्द्रह वर्षों से दयानन्द मठ चम्बा की पुण्यमय यज्ञशाला में परम तपस्वी, परोपकारी, यज्ञोमय जीवन वाले, यज्ञ पुरूष, स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज के द्वारा प्रतिवर्ष श्रद्धा व निष्ठा से किए जाने वाला ऋग्वेद के सातवें मण्डल के ६६वें सूक्त के ग्यारहवें मंत्र में वर्णित, दुर्लभ शारद यज्ञ इस वर्ष भी पूर्ण निष्ठा व श्रद्धा से किया गया। दुर्लभ यह शारद यज्ञ पहले की भांति गरिमा, भव्यतमता और आलौकिता को लिए हुए था। आदर्श विद्यालय की छात्राओं के द्वारा दयानन्द मठ दीनानगर के छात्रों के द्वारा गान किए जा रहे पवित्र वेद मंत्रों की ध्वनियाँ गिरि गह्वरों को, चम्बा की घाटियों को गुंजायमान करती रही। यज्ञ की सुगन्धि को लिए पूत व पवित्र शीतल समीर चारों दिशाओं में प्राणियों को अमोद व प्रमोद प्रदान करती रही। यज्ञ में डाली गई प्रभूत घृत, उत्तम प्रकार से निर्मित विशेष सामग्री श्रद्धालुओं के द्वारा साथ में लाकर श्रद्धा से यज्ञ में समर्पित अन्न, फल, अखरोट, काजू, बादाम, गरी, छुहारे और खीर आदि से दिव्य आत्माऐं, दिव्य पुरूष, स्वर्गस्थ देव व पितृगण तृप्त होते रहे। पूर्णाहुति के समय ढेर सारे नारियलों के साथ-साथ विशिष्ट हव्यों को ग्रहण करते-करते तो वे अजीर्णता को प्राप्त हो गए। यज्ञ में उपस्थित श्रद्धालुजन, दिव्यजनों के ढेर सारे आशीर्वाद को अपने-अपने आंचल में समेटकर, पोटली बनाकर धन्य-धन्य होकर, भाव-विभोर होकर, एक आलौकिक आनन्द को ह्रदयों में समेटे भारी मन से शिथिल कदमों से, कुछ खट्टी-कुछ मीठी यादों को लिए अश्रुप्रपुरित नेत्रों से इस पवित्र भूमि से इस दिव्य स्थान से हुए।

भावुकता भरा महौल : इस बार का यह यज्ञ भावुकता से भरपूर था। कई यज्ञ प्रेमी जो पहले इस यज्ञ में हर बार नजर आते थे, उत्साहपूर्वक यज्ञ में भाग लेते थे, यज्ञ के लिए ही समर्पित थे। इस बार नजरें उन्हें ढूंढती रहीं, टटोलती रहीं। प्यासे नयन अपनी प्यास बुझाने के लिए इधर-उधर ताकते रहे। मृगतृष्णा सी इनकी प्यास नहीं बुझनी थी, न ही बुझी। क्योंकि वे स्थूल चर्म चक्षुओं के द्वारा देखने योग्य रहे ही नहीं थे। वे दिव्य लोकवासी हो गए थे, वे दिव्य पुरूषों में सम्मिलित हो गए हैं। होतारः स्वर्ग यान्ति-वेद के इस वाक्य से हम पूर्ण रूप से आश्वस्त हैं। दिव्यजन देव व पितृगण अपने सूक्ष्म शरीरों से यज्ञ में अपने भाग को ग्रहण करने उपस्थित होते हैं। उन दिव्यजनों के साथ हमारी स्थूल आंखें जिन्हें न देखकर बुझी-बुझी सी थी, वे सब भी अपने सूक्ष्म शरीरों से उपस्थित होंगे। हमारी वेवशी व लाचारी को देख रहें होंगे। आंखें बंदकर सूक्ष्म चक्षुओं के द्वारा देखने का प्रयास करते हुए प्रबल वेग से प्रवाहित अश्रुधाराओं से बाधा उपस्थित होने से अपने प्रयास में असफल होने पर वेवश हमारी वेवशी को देख रहे होंगे और देख-देख वह भी अवश्य खिन्न हुए होंगे। क्योंकि वे हमारे प्रियजन थे, हमारे ह्रदयों में बसे आत्मीयजन थे। हम लोग उन्हें बहुत-बहुत चाहते थे। बहुत-बहुत प्यार करते थे। जिनके बिना जीवन अधूरा लगता है। जिन्हें यादगार दिल में उदासी छा जाती है। खैर यह सृष्टि का चक्र है। यह ईश्वर की लीला है। संसार का नियम है। हम सब उसमें बंधे हैं। यहाँ पर किसी का कोई वश नहीं चलता। यहाँ पर सभी वेवश है। हमारा जो जितना प्यारा होता है, उसका वियोग उतना ही दुःखी करने वाला होता है। हम जिसे जितना अधिक चाहते, उसकी जुदाई उतना ही आहत-मरमाहत करने वाली होती है। जिसका सामित्य जितना सुखकारी होता है, उसकी दूरी उतनी ही कष्टकारी होती है। यह प्रकृति का नियम है। फिल्मकार ने गीत लिखा है-इतना भी पास न आओ कि दूर जाना मुश्किल हो, इतना भी दूर मत जाओ कि पास आना मुश्किल हो। वेद, शास्त्र हमारे धर्म ग्रंथ पुकार-पुकार कर कहते हैं कि-हे मनुष्यों तुम संसार में आए हो, उसका कोई उद्देश्य है, उसका कोई ध्येय है। तुम्हारा यहाँ आना निरर्थक नहीं है, निरूद्देश्य नहीं, सोद्देश्य है और वह है कर्तव्यपरायणता कर्तव्यों का निर्वहन। उसे अपनी आंखों से ओझल न होने दो। परमात्मा ने जो कुछ भी तुम्हें सौंपा है, तुम्हें दिया है, वह उसकी धरोहर है। उन सबको परमात्मा की धरोहर समझकर उनके साथ व्यवहार करो। उनके प्रति तुम्हें जो जिम्मेवारी सौंपी गई, उस जिम्मेदारी को पूरी निष्ठा से निभाओ, न कि उसमें अपने मन को उलझाकर बैठो। उन्हें अपना मान बैठो, संसार में कोई अपना नहीं, कोई भी वस्तु जो प्राप्त है अथवा प्राप्तव्य है अपनी नहीं। जो दिखाई दे रहें है अथवा जो न दिखाई दे रहे हैं यह सब उस नृचक्षस की है, उस प्रभु की है। उस द्रष्टा की है,

जिसकी हम कठपुतलियाँ हैं। जिसके हम खिलाड़ी हैं, जो हमें खेल खिला रहा है।

ईशावास्यमिदं सर्वं यद किञ्चिद् जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन मुञ्जिथा मा गृद्ध कस्यस्विद्धनम्।।

पर हम मानते कहाँ। पहले तो वेद शास्त्रों का स्वाध्याय ही नहीं करते, करते भी हैं तो उस पर गहन चिन्तन व मनन नहीं करते जिसका परिणाम यह होता है कि मोहिनी इस प्रकृति की कण्टकाकीर्ण झाड़ियों में मोहवश अपना दामन उलझा बैठते हैं और इतनी गहराई तक उलझा देते हैं। फिर जीवन भर, जीवन भर ही क्यों जन्म–जन्मों तक व्यथा व पीड़ा ही झेलनी पड़ती है। लाचारी व वेवशी के अलावा कुछ भी पल्ले नहीं पड़ता। साहूकार जब अपनी धरोहर सहसा ही आकर ले जाता है, जिसके मोह में हम फसें होते हैं, जिसके मायाजाल से हम बाहर नहीं निकल पा रहे होते हैं, जिसकी चकाचौंध में ही हमारी आंखें चौंधियाई होती हैं, तब जब वह हमसे छिन जाता है, तब हम दहाड़े मार–मारकर रोते हैं। उस सांप के समान जो अपनी चमचमाती देदीप्यमान मणी में ही मस्त होता है। मणी छिन जाने के बाद जिस प्रकार भूमि पर लोटता है, फुफकारे मारता हुआ, छटपटाता हुआ अपने प्राणों को संकट में डाल देता है। हम भी छटपटाते हैं, रोते हैं, विलखते हैं और प्राणों को संकट में डाल देते हैं। गीतकार ने फिर लिखा–बड़े धोखे हैं इस राह में, जरा बचके जरा संभल के राही चलना।

नीतिकार का वचन है–संसर्गजा दोष गुणाः भवन्ति। हम परमात्मा की अपेक्षा प्रकृति के ज्यादा सन्निकट हैं। चाहकर भी परमात्मा के समीप नहीं हो पाते। वेद का मंत्र है–उपत्वाग्ने दिवे दिवे।" हे अग्नि स्वरूप परमात्मन हम विचारपूर्वक बुद्धियों से नमस्कार करते हुए आपके समीप आते हैं। समीप जाने से तद्गुण तद्स्वभाव को आत्मसात् करना होता है। परमात्मा सुख स्वरूप है। परमात्मा का वह गुण हमारे अन्दर भी आ जाए जिससे जीवन सुखमय हो जाए। जिसके लिए यह आत्मा जन्म–जन्मांतरों से भटक रही है। इसके विपरीत न चाहते हुए भी हम प्रकृति के निकट दर निकट होते चले जाते हैं। प्रकृति की चुम्बकीय आकर्षण वाली मोहिनी छवि की ओर अनायास ही आकर्षित होते चले जाते हैं। जिसका परिणाम दुःख होता है, कष्ट होता है। उपनिषदकार इन्हीं श्रेय और प्रेय इन दो मार्गों का चित्रण करता है। हम लोग भी प्रकृति के अधिक निकट हैं अर्थात प्रेयमार्ग के पथिक हैं। अतः दुःखी व व्यथित होना स्वाभाविक है। इसलिए इस पूरे यज्ञ में अपने आत्मीयों को न पाकर अपने दिवंगत प्रियजनों को न देखकर आंखें अश्रुप्रपूरित थी। गला रूंधा रहा। चेहरे पर हर्ष व उल्लास नहीं था।

१. मुम्बई से पूज्य माता कृष्णा गांधी जी जो इस यज्ञ में अपने दलबल के साथ आया करती थी, कुछ काल से एक वृद्धावस्था दूसरा पतिदेव के अस्वस्थता के कारण और फिर अपने गिरते स्वास्थ्य के कारण नहीं आ पाती थी, पर अपनी ओर से व अपनों की ओर से इस यज्ञ में सहयोग राशि अवश्य भेजा करती थी। कुछ वर्षों पहले पतिदेव के दिवंगत होने पर भी उनके उत्साह में कमी नहीं आई थी। इस बार उनके भी दिवंगत होने पर उनका अभाव खलता रहा। उनकी ममतामयी मूर्ति को देखने के लिए आंखें तरसती रही, दिल मचलता रहा।

२. फिरोजपुर से श्री वेद प्रकाश जी बजाज अपनी धर्मपत्नि पूज्या माता जी के साथ इस यज्ञ में आते थे। इस बार पूज्या माता जी के दिवंगत हो जाने से, वह भी एकांगी हो गए। असहाय अस्वस्थ होने के बाद भी भावनावश एकांगी ही नजर आए। माता जी साथ नहीं थी। माता जी की चहलकदमी देखने को नहीं मिली। पहले पूज्या माता जी थक जाती तो बाहर कुर्सी में बैठ जाती फिर थोड़ी देर के बाद यज्ञ वेदी में बैठकर आहुतियाँ डालने लगती। यह क्रम उनका पूरे रात–दिन के यज्ञ में चला होता था। उनकी चहल–कदमी भी अब देखने को नहीं मिलेगी। श्रद्धामयी–ममतामयी उनकी छवि अब स्वप्नवत् हो गई है। यह टीस हृदय से उठती रही।

प्रिय पुत्र ऋषि कुमार : उपरोक्त प्रौढ़जनों के साथ इस यज्ञ के यज्ञमान के पद को सुशोभित करने वाला, पूज्य स्वामी जी महाराज के भावी आशाओं का केन्द्र, राष्ट्र धरोहर, देश, जाति व समाज के लिए कुर्बानी, जजबातों वाला सहृदय, दया, उदारता, भावुक मन वाला, छल–कपट से सर्वथा अन्जान, हर किसी पर भरपूर रूप से विश्वास करने वाला, सभी का लाड़ला, सभी का प्यारा ऋषि कुमार भी इस यज्ञ में कहीं नजर नहीं आ रहे थे। सबकी आंखें उसे ही ढूंढ रही थी। यज्ञमान पद पर विराजमान होकर घृताहुतियों के साथ–साथ वेद पाठ करते हुए उसे देखना चाहती थी। उसके द्वारा उच्चरित पवित्र ऋग्वेदद की ऋचाओं की ध्वनि सुनना चाह रही थी। पर यह सब संभव नहीं हो पाया। क्योंकि वह भी सहसा ही हम सभी को छोड़कर दूर बहुत दूर चला गया। वहाँ चला गया जहाँ से कोई भी अपने पूर्व रूप में वापस नहीं आता। उपरोक्त प्रौढ़जन संभवतः अपने प्यारे व लाड़ले को अपने साथ दिव्य लोकों को ले गए। वहाँ भी उन्हें इसकी जरूरत महसूस हुई होगी। इन सभी प्रियजनों की कमी इस सारे यज्ञ में खलती रही। वरवस इनकी यादें मानस पटल पर उभरती रही। इनका अभाव मन को कचोड़ता रहा, हृदय को व्यथित करता रहा। जिसकी अभिव्यक्ति बीच–बीच में आंखों से प्रवाहित अश्रुधाराओं के

रूप में होती रही। ईश्वर इन सभी दिवंगत आत्माओं को शान्ति दें, सद्गति दे और दिव्य लोकों में स्थान दें बस हमारी यही कामनाएं और प्रार्थनाएं हैं। पूरे यज्ञ में रही और आगे भी रहेंगी। परम पिता परमात्मा के साथ–साथ दिव्य लोकों को प्राप्त, दिव्य पुरूषों की पंक्ति में सम्मिलित वे सभी दिव्यजन, आत्मीयजन, अन्य दिव्य आत्माओं, दिव्य पुरूषों ऋषियों, महर्षियों, देवजनों व पितृजनों के साथ मिलकर हमारे कल्याण में संलग्न में संलग्न रहें। परोपकार, राष्ट्रीय भावना, समाज कल्याण, प्राणिमात्र की भलाई के लिए किए जा रहे यज्ञ याग के साथ–साथ हमारे सभी कार्यों में हमारा सहयोग करें। प्रतिवर्ष इस यज्ञ की सफलता के लिए हमें शक्ति दें। हमारा साथ निभाएं। यह हम उनसे भी याचना करते हैं, प्रार्थना अभ्यर्चना करते हैं।

यज्ञ पुरूष : यज्ञपुरूष, महान् आत्मा, वेदाग उदात्त चरित्र वाले, यज्ञोमय जीवन वाले, परोपकार परायण, दूसरों के दुःख व दर्द से व्यथित होने वाले, विभिन्न प्रकार के रोगों से ग्रसित, हजारों लोगों को जीवन देने वाले, अंधेरे में डूबे हजारों को नेत्र ज्योति प्रदान कर परमात्मा की सृष्टि को निहारने का सौभाग्य प्रदान करने वाले, सैंकड़ों गरीब बालाओं की शादियाँ कर उनके जीवन में सौभाग्य जगाने वाले हजारों गरीब बच्चों को शिक्षित व दीक्षित कर उनके भविष्य को संवारने वाले, जीवन की राह में भटके अनेकों राहगीरों को जीवन की राह दिखाने वाले, मानव समाज में ज्ञान की लौ जगाने वाले, कर्मठ अथक परिश्रमी, परोपकारी, त्याग, तपस्वी संत पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज भी अपनी तपस्थली से, अपनी यज्ञ भूमि से अपने द्वारा रचित, अपने द्वारा आयोजित, सैंकड़ों, लम्बे दीर्घकालिक, दैनिक व वृहद, विविध प्रकार के अनेकानेक यज्ञों के प्रतीक, देवों व पितरों की भोगस्थली, इस यज्ञशाला में कहीं नजर नहीं आए। सिर में पगड़ी बांधकर स्वच्छ भगवे वस्त्रों को पहनकर "वेद व यज्ञ की पुस्तकों को लिए यज्ञशाला में सर्वप्रथम जो कभी अपने आसन पर विराजमान होकर उद्बोधन के बाद यज्ञ को आरम्भ करते थे, आंखें मूंद परमात्मा के प्रति अपने आपको अपने यज्ञकर्म की, समर्पित कर यज्ञ आरम्भ किया करते थे। इस बार उनके अभाव में यज्ञ आरम्भ किया गया। यज्ञ कराने के लिए भगवे वस्त्रधारी उन्हीं के शिष्य स्वामी सवितानन्द जी झारखण्ड वाले उनके स्थान पर बैठे थे। जोकि विद्वान् सुलझे हुए वक्ता है। यज्ञ के प्रति उनकी भी गहरी निष्ठा है। उनके ब्रह्मत्व में यज्ञ सुव्यवस्थित रूप से सम्पन्न हुआ। पर संसार के कल्याण की भावना को हृदय में संजोए हुए धूनी रमाने वाले शंकर स्वरूप पूज्य स्वामी जी अपने द्वारा रचाई यज्ञ रूपी धूनी से नदारद थे। जिस यज्ञ को उन्होंने भाव विभोर होकर उत्साह व उमंग के साथ आरम्भ किया था, जिस यज्ञ को नाना विरोधों के बाद भी उन्होंने नहीं रोका, प्राकृतिक आपदाओं के बाद भी जिनके कदम भी नहीं डगमगाए, दैविक बाधाओं के बाद भी जिन्होंने यज्ञ को विराम नहीं दिया, देवों के द्वारा ली गई हर परीक्षा से जो उतीर्ण होकर निकले। कवि की उक्ति के अनुसारः

बाधाएं कब बांध सकी आगे बढ़ने वालों को।
विपदाएं कब रोक सकी मरकर जीने वालों को।।

जिनका हौंसला हर अवस्था में हमेशा ही बुलन्दियों पर रहा, जिनके उत्साह व उमंग में कभी कमी नहीं आई, जिनका मुख मण्डल एक आलौकिक तेज से हर समय दमकता रहता था, उस यज्ञ भूमि पर उनके दर्शन अब दुर्लभ हो गए थे। प्रखर तेज पुञ्ज से युक्त, सभी को आकर्षित सभी को प्रभावित करने वाले मुख मण्डल वाली वह भव्य मूर्ति अब कभी देखने को नहीं मिलेगी। वह अब स्वपनों का विषय हो गई है। क्योंकि पञ्चतत्व में विलीन होने के लिए, उनके स्थूल शरीर को छुड़ा–सूक्ष्म शरीर के साथ उनकी आत्मा को दीर्घकाल से यज्ञ में प्रदत्त आहुतियाँ दिव्यलोकों को ले गई हैं। जहाँ उन्होंने उनके लिए स्थान सुरक्षित रखा हुआ था। प्रिय ऋषि जहाँ उनके स्वागत के लिए दिव्यजनों की अगवानी में खड़ा था। यज्ञपुरूष, यज्ञों के प्रति अगाध निष्ठा वाला वह व्यक्तित्व अब आंखों का विषय रहा ही नहीं। यज्ञ में उनकी कितनी निष्ठा थी। यज्ञ के प्रति वे कितने समर्पित थे। कर्मठता के प्रतीक, धुन के धनी पूज्य स्वामी जी के अवस्था चित्रण से अनुमान लगाया जा सकता है। पीछे दो तीन सालों से वे अस्वस्थ चले आ रहे थे। पर यज्ञों के प्रति उनकी अरूचि लेषमात्र भी नहीं हुई। बल्कि ज्यों–ज्यों स्वास्थ्य में गिरावट आती गई यज्ञों को करने की उत्कट अभिलाषा प्रबल होती गई। उठने–बैठने में असक्त होने पर भी पिछले यज्ञों में उत्साह से भाग लेते रहे। हमारे मना करने पर भी कुछ काल के लिए बैठने को आते, पर यज्ञ को पूर्ण करने के बाद ही पूर्णाहुति के बाद वापस जाते। बीच–बीच में वेदोपदेश भी करते। प्रवचन भी देते। इस वर्ष चार–पाँच महीनों से स्वास्थ्य बहुत ज्यादा गिर गया था। अन्दर बाहर लैट्रिंन बाथरूम दो आदमी अगल–बगल से पकड़ कर ले जाते। फिर बिस्तर पर लेट जाते फिर किसी समय थोड़ी देर के लिए कुर्सी पर बिठा देते। लेटे–लेटे, बैठे–बैठे भी उनका चिन्तन चला रहता। इसी बीच मन में बारह साल के सत्संग सत्र व यज्ञ का संकल्प उनके मन में उपजा। बारह साल का बजट भी उन्होंने बना लिया हमने इसके लिए अपने हाथ

खड़े कर लिए। फिर भी वे टस से मस नहीं हुए। कहने लगे मैं कहीं बाहर जाकर इस अनुष्ठान को कर लूंगा। उन्हें अपने स्वास्थ्य की भी चिन्ता नहीं थी। पर हमें तो थी। अतः मेरी धर्मपत्नी उन्हें जालंधर ले गई। मेरी धर्मपत्नी स्वनाम धन्या सरस्वती देवी बेटी के समान उनके साथ जाती। डॉक्टरों के साथ अधिकार पूर्वक विचार विनिमय कर स्वामी जी की स्थिति को विस्तार से उनके सामने रख यथायोग्य उपचार कराती। और माँ के समान उनकी पूरी देखभाल करती। क्या खाना है, क्या नहीं खाना है, इसका पूरा ख्याल रखती। अब भी जब जालन्धर उन्हें ले गई, आर्य समाज गोबिन्द गढ़ में ठहरे थे–समाज वालों ने विशेषकर श्री इन्द्र शर्मा जी ने स्वामी जी के ठहरने के लिए अटैच लैट्रिंन, वॉथरूम, एसी से युक्त सुन्दर कमरा अलग से तैयार किया हुआ है। जिसमें भगवा विस्तर हर समय बिछा हुआ होता है। वहाँ रात्रि को स्वामी जी को असहय पीड़ा हुई। मुझे फोन आया, महावीर असहय पीड़ा हो रही है। लगता है अब न बचुंगा। मैं बारह वर्षीय यज्ञ अब नहीं कर पाऊंगा। स्वामी जी का पटेल हॉस्पीटल में हरनिया का ऑपरेशन हुआ। परमात्मा की कृपा से व डॉक्टरों की सूझ–बूझ से ऑप्रेशन सफल हुआ। दो–चार दिनों बाद स्वामी जी चम्बा आ गए। ऑप्रेशन को एक सप्ताह नहीं हुआ था कि एक दिन प्रातः हम दोनों पति–पत्नी को बुला प्रिय ऋषि तब थे, उन्हें भी बुला–५ मई को मेरा जन्मदिन है। उस दिन से बारह वर्षीय यज्ञ शुरू कर देंगे। हमने विरोध करना था। हमने विरोध किया। उनकी स्थिति ठीक वैसी ही लगती थी जैसे हिंसक जन्तुओं से घिरा प्राणी उनके द्वारा दबोचे जाने पर भी उठकर भागने का प्रयास करता है। तो वह हिंसक जन्तु पुनः उन्हें पुरजोर से दबोच लेते है, उठने नहीं देते, वैसे ही बीमारियों से घिरे होने के बाद भी जब थोड़ा लाभ प्रतीत हुआ तो पुनः दीर्घ सत्र का अपना राग अलापने लगे। तो बिमारियों ने उन्हें पूरी शक्ति से दबोच लिया। जिसके परिणामस्वरूप उनका विस्तर से उठना बैठना भी बन्द हो गया। भूख व प्यास भी बन्द हो गई। चम्बा में अल्ट्रासाउण्ड करवाया। एम.डी. ने घर में ही आकर पूर्ण रूप से चैकअप किया। औषधियों में थोड़ी फेरबदल की। स्थिति नहीं सुधरी तो पुनः जालन्धर ले गए। पटेल हॉस्पीटल में दाखिल किया। पाँच छः दिन वहाँ रहे। दो–तीन दिन समाज में ठहरे। फिर चम्बा आ गए। यहाँ आने के बाद कुछ दिन ठीक चला। उठकर दैनिक यज्ञ में भी शामिल होते। थोड़ी देर बैठने के बाद उन्हें थोड़ा ध्यान भी लगाते पर पाँच छः दिनों से बैचेनी ने उन्हें घेर लिया। अब न दिन को नींद आती न रात को। उलटते–पलटते समय बीतता। और अन्तिम दिन तो पाखाने के रास्ते खून का जो प्रवाह शुरू हुआ वह थमा नहीं और ५ अगस्त २०१५ को रात्रि को पौने दस बजे वे महाप्रयाण कर गए। सम्भवतः। बारह वर्षीय अपने संकल्प को कहीं और पूरा करने के लिए चले गए। सारे यज्ञ में अलौकिक प्रतिभा वाली वह दिव्य मूर्ति हृदय पटल पर उभरती व विलीन होती रही। हृदय को व्यथित व आंखों को अश्रुप्रपूरित करती रही। बड़ी तमन्ना थी मेरी कि कम से कम इस शारद यज्ञ तक तो पूज्य स्वामी जी रह जाते। उनके सामने ही हम लोग इस यज्ञ को भव्य रूप से सम्पन्न करते। जिससे उनकी आत्मा परम संतोष को प्राप्त होती। इसीलिए मैंने अपने सभी आत्मीय जनों को शारद यज्ञ की सूचनार्थ भेजे पत्र का शीर्षक श्राद्ध तर्पण रखा। पर स्वामी जी तब तक नहीं रूके। उन्हें अपने लाडले के पास जाने की जल्दी थी। उसकी जुदाई वह सहन नही कर पा रहे थे। अतः शारद यज्ञ की प्रतीक्षा किए बिना चले गए। संभवतः उन्हें हम पर पूर्ण विश्वास था। खैर उन्हीं के आशीर्वाद से उस परम कृपालु ईश्वर की महान् अनुकम्पा से इस वर्ष का दुर्लभ शारद यज्ञ निर्विघ्न सम्पन्न हो गया। यज्ञ के दौरान श्री हरिशचन्द्र मुनी, दीनानगर से आए प्रभुजी हेमराज व मनोज कुमार शास्त्री के साथ–साथ महर्षि दयानन्द आदर्श विद्यालय की छात्राओं के मनमोहक प्रभु भक्ति के भजन होते रहे। स्वामी सवितानन्द जी व मेरे उपदेश भी होते रहे। सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी जी के प्रियपात्र सात्विक व सुलझे हुए वक्ता, सरल व भावुक हृदय वाले पूज्य स्वामी आर्यवेश जी के आशीर्वचन बरसते रहे। उसी परम पिता ने हमें शक्ति दी। उन्हीं पूज्य चरणों ने हमें सामर्थ्य दिया। यज्ञ में प्रदत हव्य को ग्रहण करने को उपस्थित दिव्य आत्माओं व दिव्य पुरूषों ने भरपूर आशीर्वाद दिया कि हम इस दुर्लभ कष्टसाध्य यज्ञकर्म को निर्विघ्न सम्पन्न कर पाए। यज्ञ में उपस्थित सभी साधक जन, यज्ञ प्रेमी भाव विभोर थे। सभी की आंखें अतीत की और झांकती हुई मुक्ताकणों को लुढका रही थी। भगवन हर वर्ष इस यज्ञ को भव्यतम रूप से आयोजित करते हुए अतीत के पन्नों को पलटते हुए पूज्य चरणों की स्मृति को तरोताजा करते रहें। इस प्रकार ईश्वर से प्रार्थना करते हुए विदा हुए। इस वर्ष यह सब देखने को मिला, सुनने को मिला। आगामी वर्ष न जाने कैसा होगा, हममें से कौन होगा, कौन नहीं होगा। यह समय के गर्भ में है। प्रभु ही इस बात को जानता है। आज हम दूसरों के विषय सोच रहे हैं। शोकाकुल हो रहे हैं, व्यथित हो रहे हैं। कल हम भी सोचनीय हो सकते हैं। हमारे लिए भी कोई शोकाकुल होगा। इसी प्रकार के विचारों का तानाबाना बुनते हुए सबने आगामी वर्ष पुनः यज्ञभूमि में आएंगे, देवों व पितरों को भोग लगाएंगे, इन संकल्पों के साथ विदा ली।

ओ३म्

इष्टापूर्त कर्म हेतू आमन्त्रण

♦आचार्य महावीर सिंह, अध्यक्ष, दयानन्द मठ चम्बा

प्रिय सज्जनों, हमारी भारतीय संस्कृति यज्ञों की संस्कृति है। परमात्मा ने जब सृष्टि का निर्माण किया तो यज्ञ के द्वारा ही संसार का निर्माण किया। वेद में इसका प्रतिपादन किया है :–

यज्ञेन यज्ञययजन्त देवा : अर्थात् देवताओं ने यज्ञ के द्वारा ही इस संसार रूपी यज्ञ को रचा। गीता भी इसी बात का समर्थन कर रही है।

सह यज्ञाः प्रजा सृष्टवा, पुरोवाच प्रजापतिः
अनेन प्रसविष्यंध्वं, एष वोऽस्त्विष्ट कामधुक्।

अर्थात् : सृष्टि के आदि में यज्ञ के द्वारा प्रजाओं का निर्माण करने के बाद प्रजापति ने प्रजाओं को आदेश दिया कि हे मेरे ओरष पुत्रों तुम इस यज्ञ का सहारा लेना। इस यज्ञ को बढ़ाना। आप लोगों के द्वारा वृद्धि को प्राप्त यह यज्ञ तुम्हारी ईष्ट कामनाओं को पूर्ण करने वाला होगा। तुम्हारी समस्त मनोकामनाएं इससे ही पूर्ण होगी।

प्रिय सज्जनों आपकी प्रिय संस्था दयानन्द मठ में, यज्ञपुरूष स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज गत चालीस वर्षों से मठ की भव्य यज्ञशाला में बड़े–बड़े यज्ञों का आयोजन निरन्तर करते चले आ रहे थे। जिसके कारण हमारी चम्बा नगरी भारी दैवीय आपदाओं से बची हुई है। कुछ वर्ष पूर्व मठ में एक वर्ष तक लगातार चल रहे यज्ञ के मध्य में एक प्रबल भूकम्प का वेग आया था। साढे छः रियेक्टर वाले इस भूकम्प से सारी की सारी चम्बा नगरी डोल गई थी। स्वयं वह यज्ञशाला जिसमें यज्ञ चल रहा था, झूले के समान झूलने लगी थी। यज्ञशाला ही क्या सारे का सारा चम्बा जिसने भी देखा था झूला झूल रहा था, पर यज्ञ चलता रहा। कुछ क्षणों के बाद भूकम्प का वेग थम गया। परिणाम स्वरूप चम्बा में किसी भी प्रकार से जन–धन की हानि नहीं हुई थी। इससे पूर्व इतने ही पैमाने के भूकम्प से महाराष्ट्र का लातुर शहर सर्वथा बर्बाद हो गया था। यज्ञों से देव–पितर प्रसन्न होते है। यज्ञों से उनकी तृप्ती होती है। तृप्ती को प्राप्त वे देवजन, पितृजन हर प्रकार से हमें भी तृप्त करते हैं। गीता में कहा है :–

देवान् भावयतानेन्, ते देवाः भावयन्तुवः।
परस्परं भावयन्तः श्रेयः परं अवाप्स्यथः।।

अर्थात्–इन यज्ञों के द्वारा तुम देवजनों को बढ़ाओ। उन्नत करो। उन्नत होकर वे देवजन तुम्हें उन्नत करेंगे। इस प्रकार एक दूसरे को उन्नत करते हुए परम श्रेय को प्राप्त करो। मेरे नगरवासियो इस समय विगत चालीस वर्षों से बड़े–बड़े दीर्घ सत्रीय यज्ञों को करने वाले यज्ञपुरूष पूज्य स्वामी जी महाराज अब नहीं रहे हैं। उनके द्वारा पिछले पन्द्रह वर्षों से शारदीय नवरात्रों के प्रथम नवरात्रे को रात दिन अनवरत किए जाने वाले यज्ञ का समय भी समीप आ गया है। अक्टूबर मास १३ तारीख से १४ तारीख तक किए जाने वाले इस यज्ञ की सफलता के लिए आप लोगों का सहयोग अपेक्षित है। इष्टापूर्त वाले इस यज्ञ को हम लोग मिलकर अपनी अभिष्ट कामनाओं की पूर्ति हेतू, अपने चम्बा नगरी की सुरक्षा हेतू प्राणीमात्र के कल्याण हेतू तथा दिव्य कर्मों के कारण दिव्य लोकों में विराजमान यज्ञपुरूष पूज्य स्वामी जी महाराज को तृप्त व संतुष्ट करने के लिए करें। इसके लिए मैं आप सभी का आह्वान करता हूँ। वार्षिक यज्ञ १० अक्टूबर २०१५ से आरम्भ हो जाएगा। १२ अक्टूबर २०१५ को सायं इसकी पूर्णाहूति होगी और १३ अक्टूबर २०१५ प्रातः साढे छः बजे से दुर्लभ शारद यज्ञ आरम्भ होगा और १४ अक्टूबर २०१५ को प्रातः ६.३० बजे इसकी पूर्णाहूति हो जाएगी। लंगर बाहर से आने वाले अभ्यागतों की सेवा के लिए १० अक्टूबर २०१५ से आरम्भ हो जाएगा। स्वयं सेवी संस्थाएं इस लंगर के कार्य को अपने हाथ में ले लें तो उनका भी महान् कल्याण होगा। मनु महाराज ने कहा है :–

विघसाशी भवेन्नित्यम, नित्यं वाऽमृतभोजनम्।
विघसो भुक्तशेषंतु यज्ञशेषं तथाऽमृतम्।।

अर्थात : मनुष्य को हमेशा विघशाषी यानि विघष भोजन करने वाला व अमृत भोजन करने वाला होना चाहिए। विघशाषी–यज्ञ में उपस्थित विद्वानों, सन्यासियों को खिलाने के बाद खाने वाला विघशाषी होता है। और यज्ञ के बाद किए जाने वाले भोजन को अमृत भोजन कहा गया है। इस प्रकार के भोजन को करने वाले परम कल्याण को प्राप्त होते हैं। इहलोक में भी आनन्द पाते हैं। और परलोक भी परमानन्द को प्राप्त करते हैं, उत्तम लोकों को प्राप्त करते हैं। सर्वतोमुखी कल्याणकारी इस यज्ञ में अपने सौभाग्यों को जगाने के लिए महान् पुण्यों को अर्जित करने के लिए। आओ इस यज्ञ में अन्न, धन, जन का समर्पण कर इसे सफल बनाएं। यज्ञो वैः श्रेष्ठतमम् कर्म संसार में सबसे श्रेष्ठ कर्म है तो वह यज्ञ है। यह वेद भगवान कहते हैं। अतः इस श्रेष्ठ कर्म को सम्पन्न कर पुण्यों के भागीदार बनें। यज्ञमान बनने के इच्छुक व्यक्ति भी सम्पर्क करें।

अबला भई सबला

♦विनोद स्वरूप, मुख्य प्रबन्ध सम्पादक

नारी को ज्ञान और सम्पति का स्त्रोत माना गया है तथा वह देवताओं के समान पूजनीय है। वर्तमान में हम विकास व आधुनिक की बात करते हैं। स्त्रियों को समाज का अभिन्न अंग मानते हैं पर संसार का अस्तित्व और उसकी पहचान बनाने वाली नारी का स्वयं का अस्तित्व बौना होकर रह गया है। पुरूष प्रधान समाज नारी पर हमेशा भारी पड़ता है। आज के वैज्ञानिक युग ने जहाँ अनेक क्षेत्रों में सकारात्मक क्रांति ला दी है, वहीं कन्याओं को जन्म से पूर्व ही मार देने का दर्दनाक पहलू भी हमारे सामने उजागर हुआ है।

आज की बालिकाओं का यौन शोषण होता है। निर्धनता का लाभ उठा कर इन्हें देह–व्यापार के धन्धे में झोंक दिया जाता है। भारत में अनेक ऐसे आदिवासी कबीले व गाँव हैं जहाँ धर्म के नाम पर नारी को प्रताड़ित किया जाता है। अशिक्षा, अंधविश्वास और पिछड़ेपन के कारण प्रायः ऐसी घटनाऐं हमें समाचार–पत्रों में पढ़ने को मिलती हैं। शिक्षित समाज में नारी अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति से घर को संभालने के साथ राष्ट्र निर्माण में भी अपना योगदान दे रही है। प्रत्येक क्षेत्र में अपना प्रभाव बनाती नारी पुरूष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चल रही है। आज की नारी अपने जीवन में ऐसी भूमिकाऐं निभा रही है जो उसे सम्पूर्णता प्रदान कर स्वाभिमान से जीना सीखाती है। वह अपने सभी कर्त्तव्यों को दिल से निभाती है, चाहे पत्नी का कर्त्तव्य हो, माँ का, बहु का या फिर कार्यालय में कर्मचारी का। वह किसी को शिकायत का अवसर नहीं देती और प्रत्येक स्थिति पर विजय प्राप्त करना चाहती है। आज बेटा–बेटी में कोई अन्तर नहीं रह गया है, सब एक समान हैं। जो कर्त्तव्य बेटा पूरा करता है वह बेटी भी कर रही है। आज नारी घर तक ही सीमित नहीं रह गई है वह घर की चार दीवारी से बाहर निकल कर अपनी मंजिल तलाश रही है। वह उच्च शिक्षा प्राप्त कर सफलता की ऊंचाईयों को छू रही है। उसने अपनी मेहनत से उच्च पद प्राप्त कर लिया है। आज नारी सब प्रकार से स्वावलम्बी बन गई है। आधुनिक महिलाओं में प्रतिभा की कमी नहीं है, केवल सही दिशा की आवश्यकता है। ग्लैमर की दुनिया में जहाँ पद्मश्री माधुरी दीक्षित, रेखा, हेमा मालिनी, सुष्मिता, ऐश्वर्या राय, दीपिका पादुकोण, शिल्पा शैट्टी जैसी प्रतिभाऐं हैं वहीं निर्देशन में रेवती, अपर्णा सेन, फरहा खान, मीरा नायर, दीपा मैहता का नाम प्रतिष्ठित है। संगीत क्षेत्र में भारत कोकिला लता मंगेशकर, आशा भौंसलें, श्रेया घोषाल, सुनिधि चौहान, मधु श्री तेजी से उभरी हैं। व्यापार में नैना लाल किदवई, किरन मजूमदार, एकता कपूर जैसे नाम लिए जा सकते हैं। सुनीता विलियम्स सुभद्रा कुमारी चौहान, सरोजनी नायडू, मदर टैरेसा, इंदिरा गांधी, कल्पना चावला ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नाम कमाया है। इसके अतिरिक्त पहली महिला आई.पी.एस. अधिकारी किरन बेदी, पुलिस महानिदेशक कंचन चौधरी एयर मार्शल पी. बंधोपाधय, एवरैस्ट पर विजय प्राप्त करने वाली बछेन्द्री पाल जैसे अन्य अनगिनत नामों को भी हम अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस जो प्रतिवर्ष ८ मार्च को मनाया जाता है पर गरिमापूर्ण अभिवादन करते हैं। अपने घर को कैसे चलाना है, उसमें रहने वालों की आवश्यकताओं को कैसे पूरा करना है, यह सब नारी अच्छी तरह जानती है। आय के हिसाब से खर्च करना, खर्चों में कटौती या बढ़ोतरी, घर की देखभाल करना तथा अपनी सूझबूझ और दक्षता से घर परिवार को मैनेज करने की कला उसमें एक नए साहस का संचार करती है। सम्बंधों में कैसे प्यार के रंग भरकर उन्हें समीप लाया जाय और बंधन मजबूत हों, यह कला आज की नारी खूब जानती है। वह बड़ों को मान–सम्मान देकर उनका आशीर्वाद लेती है तो छोटों को प्यार देकर उनके दिल में विशेष स्थान बना लेती है। आज नारी अपने पति के साथ कदम मिलाकर घर गृहस्थी चलाने में उन्हें आर्थिक रूप से मजबूत बनाती है। आज की 'नारी–शक्ति' के बढ़ते कदमों पर प्रकाश डालना अति आवश्यक है। अबला और सबला दोनों ही रूपों में भारतीय नारी सम्मान की पात्र है यदि नारी जाति अपनी शक्ति को पहचान कर ज्योति से ज्वाला बन जाय तो अन्यायी और अत्याचारी उसके सामने टिक नहीं सकते। इसके कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं :–

♦ राजस्थान में उदयपुर के ओड़ा गाँव में अंधाधुंध खनन से गाँव के कुएं तक सूख गये थे और सारा विकास रूक गया था। ऐसे में गाँव की तत्कालीन सरपंच वर्धिनी पुरोहित ने जान पर खेलकर बनास नदी में अवैध रेत खनन पर रोक लगवाई। वर्धिनी के सरपंच बनने पर खनन माफिया के हौसले बढ़ गये कि एक महिला के सरपंच बनने से उनकी तो मौज लग जायगी पर नदी की रात दिन चौकीदारी के लिए महिला–दल बनाकर वर्धिनी रात में स्वयं उनके साथ पहरा देने लगी। इस बीच उन पर कई बार हमला भी हुआ व गाँव के अनेक लोग उनके विरूद्ध हो गये परन्तु वर्धिनी अदालत से रेत माफिया पर रोक लगवा कर ही मानीं।

♦ उत्तर प्रदेश के जूड़नपुर गांव का अशोक जब आरती से शादी का वादा करके मुकर गया तो आरती अपने पिता को विश्वास में लेकर बैंड–बाजा–बारात सहित उसके गाँव पहुँच गई। गाँव वालों के दबाव पर अशोक के परिवार को शादी के लिए मानना पड़ा और गाँव के मन्दिर में विवाह सम्पन्न हुआ।

♦ गोरखपुर में कॉलेज से लौट रही छात्रा श्वेता मिश्रा के हाथ

से मोबाइल छीन कर बाइक पर भाग रहे बदमाशों का साइकिल से पीछा करके उन्हें पकड़ लिया। लुटेरों द्वारा कुछ दूर तक घसीटने से वह घायल हो गई पर श्वेता ने उन्हें छोड़ा नहीं। राहगीरों की सहायता से उन्हें दबोच कर पहले तो उनकी धुनाई की फिर उन्हें पुलिस के हवाले कर दिया।

♦ यू.पी. के मैलानी थाना क्षेत्र में १२वीं की छात्रा ने प्रतिदिन फोन करके उसे तंग करने वाले दुकानदार को झांसा देकर निकटवर्ती चौराहे पर बुला लिया और उसके रिक्शा से उतरते ही चप्पल से उसकी धुनाई करके घसीटते हुए ले जाकर पुलिस के हवाले कर दिया।

♦ कोटद्वार में अपनी शादी के अवसर पर नैना नामक युवती ने अपने घरवालों से साफ कह दिया कि यदि उन्होंने अपने सम्बंधियों या बारातियों को शराब परोसी तो वह फेरे नहीं लेगी। नैना के मायके और ससुराल वालों को सहमति देनी पड़ी और फिर विवाह समारोह में न तो शराब परोसी गई और न ही कोई शराबी विवाह में शामिल हुआ। यदि नारी अन्याय और प्रतिकार करने का आत्मविश्वास व शक्ति उत्पन्न कर ले तो समाज से बुराईयाँ दूर करने में कुछ योगदान अवश्य दे सकती है। नारी ही है जो मानव–सृजन में प्रकृति के साथ मिलकर एक नए युग की शुरूआत करती है। २१वीं सदी तो स्त्रियों की है। न केवल विभिन्न रोजगारों में बल्कि राजनीति, विज्ञान जैसे क्षेत्रों में भी उन्होंने अपनी विजय पताका फहराई है। विभिन्न श्रोतों से मिले आंकड़ों से मिली जानकारी के अनुसार आज के समय में आई.टी., इंडस्ट्री, चिकित्सा, प्रशासन, व्यवसाय तथा सेना में उनकी उपस्थिति दृष्टिगोचर होगी। नारी इस युग में अबला नहीं सबला हो गई है।

शोक समाचार

♦सुन्दरनगर के सुप्रसिद्ध संगीत सम्राट श्री बृजलाल भारद्वाज इसी मास ६३ वर्ष की अल्पायु में अपने परिवार सम्बंधियों को छोड़कर सदा सर्वदा के लिए ईश्वर की ज्योति में समा गए। आज भी उनकी शिक्षाऐं हम सभी को प्रेरणा देती रहेंगी। गत वर्ष दीपावली के उत्सव में वे आर्य समाज आए थे। पहले भी आते रहे हैं उन्होंने इस गाने को गाकर सभी उपस्थित जनता के मन मस्तिष्क में धाक जमा दी जिसके बोल थे :– जीवन में एक दिन जाना पड़ेगा, ये बिस्तर यहाँ से उठाना पड़ेगा।

मैं उनके घर मैं कुशलक्षेम हेतु गया। वे बिस्तर में बैठे हुए। अंतिम सफर पर चलने की तैयारी में बैठे थे। उन्होंने हम से केवल यही कहा कि अब मैं इस बीमारी से ठीक नहीं हो पाऊंगा। आप पत्नी सहित यहाँ आए और मुझे पुनः दीपावली के उपलक्ष्य में इस वर्ष पधारने हेतु अनुरोध किया। मैं इसके लिए आपका आभारी हूँ। आपके आने से मेरे अंदर ऊर्जा का संचार हो गया। मैंने केवल यही कहा आप स्वस्थ्य होकर समस्त जनता का मार्गदर्शन करें।

उनकी सांत्वना देकर हम घर आ गए। इनके पूर्व इनके जुड़वां भाई बिहारी लाल भारद्वाज व बड़े भाई ओमासुत भारद्वाज २–३ वर्षों में महाप्रयाण कर गए। इनके जाने के बाद इनके छोटे भाई किशोरी लाल भारद्वाज व महिलाएं रही हैं।

प्रभु अपनी व्यवस्था में श्री बृजलाल भारद्वाज को शांति प्रदान करें तथा समस्त परिवार को उनके विदाई के सहने की शक्ति प्रदान करें।

आर्यवन्दना परिवार यह कामना करता है बृजलाल भारद्वाज आगे चलकर परिवार में पैदा हो। १०० बसन्त ऋतुओं को देखते हुए। समाज को प्रेरित करते रहें।

–मायाराम वर्मा, प्रबन्ध संपादक

सूरज डूब रहा है।

प्रिय आत्मीय जनों, अपनी कार्यशैली से, अपनी सूझबूझ से सभी को चकाचौंध करने वाले, उत्साह उमंग रूपी आकाश को छूने के लिए लालायित, ऊंची–ऊंची लहरों से युक्त, अथाह समुद्र के समान विशाल हृदय वाले, अपने अनेकानेक सेवाकार्यों से लाभान्वित जन–जन के हृदय मंदिर में विराजमान, देश, जाति, समाज के लिए कुछ कर गुजरने की अभिलाषाओं वाले, सम्पूर्ण जीवन में बहुत कुछ करने के बाद भी और भी बहुत कुछ करने की तमन्नाओं वाले, जीवन में कभी भी विश्राम न करने वाले, श्री कृष्ण के अनुसार

'न में पार्थाऽस्ति कर्तव्यं त्रिषु लोकेषु निञ्चन
नानवाप्तमवाप्तव्यं वर्त एव च कर्मणि'

अपने जप, तप, तपश्चर्या से जो मनुष्य के द्वारा प्राप्त करने योग्य है, उसे प्राप्त करने के बाद भी जो निरन्तर कर्म में ही लगे रहते थे।

'यदयदाचरित श्रेष्ठः तत्तदेवेतरोजनः'

के अनुसार समाज के लिए कर्म का मार्ग प्रशस्त करने वाले, कर्मठता के प्रतीक, बड़े–बड़े दीर्घकालिक दीर्घसत्रीय, व्ययसाध्य, कष्टसाध्य, यज्ञों को करने वाले महान याजक, हजारों–हजारों लोगों के जीवन को चमकाने वाले, लाखों के जीवन में रोशनी भरने वाले, परोपकार परायण महान साधक, अपने दया दाक्षिण्यादि गुणों से सूर्य के समान चमकने वाले, दमकने वाले पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज इस समय सायंकालीन सूर्य के समान अस्ताचल पर्वत पर आरूढ हो गए हैं, यानि उस अवस्था को प्राप्त हो गए हैं जहाँ से उनका जीवन रूपी सूर्य किसी भी समय अस्त हो सकता है। अधिक न लिखता हुआ आप लोगों को सूचनार्थ यह पत्र लिख रहा हूँ।

भवदीय : आचार्य महावीर, दयानन्द मठ चम्बा (हि.प्र.)

श्री रामफल सिंह आर्य को भ्रातृ शोक

हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री रामफल सिंह आर्य के बड़े भाई ६६वर्षीय श्री महेन्द्र सिंह का अचानक देहावसान हो गया। परिणाम स्वरूप समस्त परिवार और सम्बन्धी शोक सागर में डूब गए। श्री रामफल सिंह आर्य की इकलौती बड़ी बहन भी इसी वर्ष स्वर्ग सिधार गई थी और उनके परिवार को आर्य वन्दना परिवार की ओर से हार्दिक सम्वेदना व्यक्त की गई। प्रभु दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे और समस्त सम्बन्धियों को इस सदमे को सहने की शक्ति और सामर्थ्य प्रदान करे।

—मायाराम वर्मा, प्रबन्ध संपादक

मकेहड़ गांव में उत्सव सम्पन्न

♦विनोद स्वरूप, मुख्य प्रबन्ध सम्पादक

श्री वीरी सिंह एवं श्रीमती नीलां आर्या ने प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी अपने निवास स्थान गांव मकेहड़, डा. चौलथरा, तह. सरकाघाट में वार्षिक उत्सव का आयोजन किया। गत वर्षों में यह उत्सव तीन दिन तक मनाया जाता रहा है, किन्तु इस वर्ष यह उत्सव पारिवारिक परिस्थितयों के कारण दो दिन २१ एवं २२ नवम्बर को ही मनाया गया। श्री वी. के यादव, प्रिंसीपल, डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल हमीरपुर इस उत्सव के मुख्य अतिथि थे। मुख्य अतिथि के साथ श्री कर्मवीर शास्त्री भी पालमपुर से इस आयोजन में पधारे थे। आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के वरिष्ठ उपप्रधान श्री कृष्ण चन्द आर्य, हमीरपुर से श्री योग प्रकाश नन्दा तथा स्वामी सत्यदेव जी महाराज, श्री वी. के. यादव, श्री कर्मवीर शास्त्री ने अपने विचारों की अमृतवर्षा कर के उत्सव में ज्ञानगंगा प्रवाहित की। उपस्थित समस्त धर्म प्रेमियों, महिलाओं, पुरूषों एवं वयोवृद्ध तथा बच्चों ने ज्ञान गंगा में डुबकी लगाकर अपना जीवन धन्य किया। भजनोपदेशक श्री सुरेश कुमार शास्त्री ने मंच से अपने सुरीले, सारगर्भित भजनों की झड़ी लगा दी जिसे सभी धर्म प्रेमियों ने सराहा। २२ नवम्बर को महायज्ञ के आयोजन के अवसर पर मुख्य अतिथि महोदय ने दीप प्रज्ज्वलित कर शुभारम्भ किया। वार्षिक उत्सव धूमधाम, हर्षोल्लास एवं श्रद्धापूर्वक मनाया गया। इस उत्सव में मुख्य अतिथि के साथ श्री कृष्ण चन्द आर्य, स्वामी सत्यदेव महाराज, कर्मवीर शास्त्री, योग प्रकाश नन्दा, सुरेश कुमार शास्त्री एवं ढ़ोलक वादक तिलक राज को हिमाचली टोपी और शाल भेंट कर सम्मानित किया गया। श्री वीरी सिंह आर्य ने पूरे समारोह की अति सुन्दर व्यवस्था की थी। लगातार दो दिन ऋषि लंगर का आयोजन किया गया जिस में समस्त गांव वासियों एवं बाहर से आए हुए श्रद्धालुओं ने अति स्वादिष्ट भोजन ग्रहण किया। पूर्णाहूति के दिन प्रातः ८ बजे से सायं तीन बजे तक भजन, प्रवचन और उपदेशों का क्रम सफलतापूर्वक चलता रहा, जिसके के लिए आयोजक श्री वीरी सिंह जी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती नीलां आर्या बधाई के पात्र हैं। आर्य समाज और ऋषि दयानन्द के प्रति अगाध श्रद्धा रखने वाले इन पति–पत्नी को ईश्वर दीर्घायु करे।

मंगल कलश

♦सत्यपाल भटनागर, अखाड़ा बाजार, कुल्लू (हि० प्र०)

मंगल कलश हमारी भारतीय संस्कृति का प्रतीक है। किसी भी यज्ञ या छोटे बड़े अनुष्ठान करने से पूर्व मंगल कलश की स्थापना की जाती है। मंगल कलश यज्ञ कुण्ड के ईसान कोण में स्थापित किया जाता है। अथर्व वेद में अमृत पूरित कलश का वर्णन है। ऋग्वेद में सोम पूरित कलश का वर्णन है। रामायण के अनुसार जब राम जी का राज्य अभिषेक किया जाना था तो राजा दशरथ ने एक सौ सोने के कलशों की व्यवस्था की थी। राजा हर्ष वर्धन जब भी किसी अभियान पर निकलता था तो पहले मंगल कलशों के जल से स्नान करता था। मंगल कलश वातावरण को दिव्य बनाता है। यह सुख, समृद्धि, वैभव तथा मंगल का प्रतीक माना जाता है। मंगल का प्रतीक माना जाता है। मंगल कलश जल से भरा होता है जिसका मुख फूल वनस्पति आदि से सुसज्जित तथा सुशोभित होता और उन पर नारियल रखा होता है। नारियल भी कलश का लघु रूप है। घर पर ओ३म् या स्वास्तिक का चिन्ह बनाया होता है। दार्शनिकों ने जल को जीवन और घर को शरीर माना है। जीवन काल से ही सुशोभित होता है। कुछ जल को मन मानते हैं। मन वैसे ही चंचल होता है जैसे कि जल। थोड़ा सा भी टेढ़ा हुआ तो बहने लगा। मन वैसा ही शीतल होना चाहिये जैसे कि जल। तभी यजुर्वेद में ऐसे छः मन्त्र हैं जिन द्वारा मन के गुण और दोष देकर प्रार्थना की गई है कि मन शुभ संकल्प वाला बने। कुछ ने शरीर को घड़ा और जल को प्राणों का प्रतीक माना है। खाली घड़ा निष्प्राण शरीर माना है। अन्य ने घड़े को बसुंधरा का प्रतीक मानते हुआ जल सागर माना है। इसका वैज्ञानिक पक्ष भी है। कहते हैं जल से भरा कलश नकरात्मक उर्जा को नष्ट करता है। चुम्बकीय उर्जा लाता है। तथा ब्रह्मांडीय उर्जा खींचता है। मंगल कलश का स्थान ईषाण कोण होता है जहाँ दीपक भी रखा जाता है। मुख में फूल वनस्पति जीवन के लिये महत्वशाली मानी गई है। सारी औषधियों का स्त्रोत यही है। यही जीवन की रक्षा हेतु अति आवश्यक हैं। हमें जल और वनस्पतियों की रक्षा करनी चाहिये तभी हमारा जीवन सुरक्षित रहेगा।

आत्मीयजनों से मेरा अनुरोध

♦आचार्य महावीर सिंह, अध्यक्ष, दयानन्द मठ चम्बा

मेरे प्रिय आत्मीयजनों, अस्ताचल पर्वत पर आरूढ़ भगवान भास्कर ने अस्त होना था, अस्त हो गया। 'सूरज डूब रहा है' शीर्षक वाला मेरा पत्र आप लोगों में से कइयों को नहीं मिला पाया होगा। जिसमें मैंने पूज्य स्वामी जी महाराज का जीवन रूपी सूर्य किसी भी समय अस्त हो सकता है, के विषय में लिखा था। कुछ पत्र भेजे गए, कुछ पत्र लिफाफों में बन्दकर डाक में डालने थे कि सूरज डूब गया। पूज्य स्वामी जी महाराज हमारी आँखों से ओझल हो गए। हमारे सामने अंधियारा छा गया :–

जहाँ में किसी और जहाँ का
किया दूर किया होगा अंधियारा
जिनकी रोशनी में रोशन थे हम
वे हमसे तो कर गए किनारा
चपल तड़िका की चमक से
चौंधियायी सी हैं आंखें हमारी
क्या कर्त्तव्यता क्या कर्त्तव्यता
स्थिति देख सोच पाने की नहीं है हमारी
जुगुनू दीप चांद सितारे बन
बिखेरना राहों में रोशनी हमारी
आए विघ्न बाधा लड़खड़ाएं पाँव
लाठी बन देना सहारा विनती हमारी
जिसे देख–देख आंखें थकती नहीं थीं
आंखों की पलकें झपकती नहीं थीं
आशाओं का केन्द्र नयनों का तारा
सबका दुलारा लाल एक ही तो था हमारा
पकड़ा था दामन बचपन से जिनका
छाया थी जिनकी जिनका था सहारा
गए छोड़ दोनों भये परलोकवासी
अब आसरा तुम्हीं का, भरोसा भी तुम्हारा
विनती तुम्हीं से न करना किनारा
एक बार नहीं सौ–सौ बार
सौ बार नहीं बारम्बार
विनती करना ना किनारा, देना सहारा।
देना सहारा.....

प्रियजनों, सोचा नहीं था कि कभी ऐसा दिन भी आएगा, सोचा नहीं था कभी शाम होगी, खिलखिलाया कमल काल के नाम होगी। सातवें द्वार को मैं अपनी गदा से तोड़ दूंगा, महाबली भीम के इस आश्वासन के बल पर, अपने रथी–महारथियों के साथ चक्रव्यूह के प्रथम द्वार को तोड़कर अभिमन्यु शत्रुओं की सेना को छिन्न–भिन्न करता हुआ जब सातवें द्वार पर पहुँच तो गया, पर जब उसने चारों तरफ नजरें दौड़ाई तो शत्रुओं से घिरा अपने आप को अकेला पाया।

प्रियजनों–मैं भी इस कर्म क्षेत्र में आज तक महान श्रम, अथक परिश्रम करता रहा। मैंने रात नहीं देखी, दिन नहीं देखा, संघर्ष करता हुआ यहाँ तक पहुँचा। सहारा था पूज्य चरणों का, आशाएं थीं प्रिय आत्मज पर। पर अब जब जीवन के इस मोड़ पर पहुँचा तो अकेला हो गया हूँ। जिम्मेवारियाँ बहुत हैं। बहुत उत्तरदायित्व आन पड़ा है। इस समय मैं हतप्रभ सा हूँ, ठगा सा हूँ। किंकर्तव्य–विमूढ़ता की स्थिति–सी है मेरी। पर जब अपने चारों ओर देखता हूँ, अपनी नजरें दौड़ता हूँ, असहाय नजरों से देखता हूँ जो आप सभी सहयोगियों, आत्मीयजनों, संस्था के हितैषियों तथा स्वामी जी महाराज के प्रियजनों को देखकर सहारा पाता हूँ। मेरा हौंसला बढ़ता है, मेरा उत्साह बनता है। मेरे प्रियजनों, अकेला न छोड़ना। एक तो दामन छुड़ा कर चले गए आप सब भी दामन न छुड़ा लेना। कदम–कदम पर मुझे आप सबका साथ चाहिए। पग–पग पर आप लोगों का सहारा चाहिए। आप लोग मुझे निराश न करना, हताश न करना। मैंने अपने जीवन को मझदार में छोड़ दिया है। अब तक जो उसकी रक्षा करते रहे वे तारनहार अब नहीं रहे। अब तो बेबस नजरों से आप सबकी ओर देख रहा हूँ। निराश न करना, बेसहारा न छोड़ देना। मेरे लिए नहीं, पूज्य स्वामी जी के मिशन के लिए। संस्था की सुरक्षा व उन्नति के लिए मुझे अवश्य–अवश्य सहारा देना।

Arya Vandana/Sml/L33/Sm/64/2000 Postal Registered No. : MANDI (HP)/21/2013-15
Valid upto 31-12-2015

बुक पोस्ट

सेवा में

680. श्री

"महर्षि दयानन्द जी महाराज का बलिदान दिवस मनाया

♦श्रवण कुमार आर्य, उप–मंत्री आर्य समाज, कालौनी, सुन्दरनगर (हि० प्र०)

संसार में महापुरूषों का आना, समाज के उत्थान का कार्य करना तो आदरणीय एवं अनुकरणीय हुआ ही करता है, उनका संसार से जाना भी एक प्रेरणा हुआ करता है, वह भी संसार को एक संदेश देकर जाया करता है। महर्षि दयानन्द जी ने जो कार्य किये उनके लिये तो पूरी मानव जाति यावत् सूर्यचन्द्र हैं तावत् ऋणि रहेगी ही, परन्तु संसार को जाते–जाते जो दिव्य संदेश देकर गये, बलिदानों की जो परम्परा चला कर गये वह भी हमारे लिये उतनी ही महत्वपूर्ण है। इसी बात को ध्यान में रखकर आर्य समाज सुन्दरनगर कालौनी तथा डी.ए.वी. विद्यालय सुन्दरनगर जिला मण्डी हि.प्र. के द्वारा संयुक्त रूप से बलिदान दिवस पर एक भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। दिनांक ७ नवम्बर २०१५ को एक विशाल शोभायात्रा डी.ए.वी. विद्यालय से चलकर सुन्दरनगर के मुख्य बाजारों से होती हुई, लगभग ४ किलोमीटर की दूरी तय करके आर्य समाज मन्दिर सुन्दरनगर कालौनी में पहुंची। मार्ग में आर्य समाज खरीहड़ी (सुन्दरनगर) के प्रधान श्री कृष्ण चन्द्र आर्य द्वारा सभी को जलपान कराया गया। लगभग ६०० व्यक्तियों की इस शोभायात्रा का नगर निवासियों ने भी भरपूर उत्साह वर्धन किया। बाजार में कई लोगों ने बिना कहे, स्वेच्छा से शोभा यात्रा में फलों का वितरण किया। एक ट्रैक्टर की ट्राली में यज्ञमण्डप भव्यरूप से सजा कर यज्ञ करते हुए आर्यजनों को देखकर सभी आश्चर्यचकित थे। दो गाड़ियों पर लाउड स्पीकर लगाकर महर्षि के गीतों एवं जयघोषों से सारे नगर को गुंज्जायमान करते आर्यजन खुशी से फूले नहीं समा रहे थे। मार्ग में महर्षि दयानन्द का चित्र एवं उनके जीवन से सम्बन्धित जानकारी तथा आर्य समाज का परिचय लगभग ३००० लोगों तक पहुंचाया गया। जिस समय शोभा यात्रा कालौनी आर्य समाज में पहुंची तो आर्य जनों ने पुष्प वर्षा करके उनका स्वागत किया तथा सभी के प्रसाद की सुन्दर व्यवस्था कालौनी आर्य समाज द्वारा की गई।

दूसरे दिन का कार्यक्रम दिनांक ८ नवम्बर २०१५ को डी. ए. वी. विद्यालय सुन्दरनगर के प्रांगण में आयोजित किया गया। पहले यज्ञ का कार्यक्रम हुआ जिसमें ११ हवनकुण्डों पर ३३ यज्ञमान सपत्नीक उपस्थित थे। यज्ञ के ब्रह्मा श्री रामफल सिंह आर्य जी थे उन्होंने बड़ी ही उत्तमता से यज्ञ सम्पन्न करवाया। इस अवसर पर डी.ए.वी. विद्यालयों के क्षेत्रीय निदेशक श्री एस. पी. अरोड़ा जी विशेष रूप से पधारे और अपना उद्‌बोधन भी दिया। यज्ञोपरान्त श्रीमति रानी आर्या, लीला नरूला तथा शशी कुमार जी के भजन हुए। श्री सत्यदेव पुरूषार्थी एवं श्री रामफल सिंह आर्य जी का व्याख्यान महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज का भारत के जागरण में योगदान तथा समाज के उत्थान विषय पर हुआ। इस अवसर पर उपस्थित यज्ञमानों को सत्यार्थ प्रकाश भी भेंट किये गये तथा इसका महत्व भी उन्हें बताया गया।

सम्पूर्ण कार्यक्रम के लिये श्री मोहित चुघ, प्राचार्य डी.ए.वी. विद्यालय का निष्काम, पवित्र योगदान प्राप्त हुआ। विनीत भाव से श्री चुघ जी ने भविष्य में ऐसे आयोजन करते रहने का आश्वासन भी दिया। ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

साभार

श्री दुनी चन्द, गाँव लदण, डा. हटगढ़, तह. सदर, जिला मण्डी ने ₹ ५००, श्री अशोक शर्मा, ग्राम द्रुहण, डा. पट्टा, तह. भोरंज, जिला हमीरपुर (हि.प्र.) ने ₹ ३००, श्री हरेन्द्र कुमार, पुनीत कुमार, गाँव व डा. बसेड़ा, जिला मुज्जफरनगर (उ. प्र.) ने ₹ २००, श्री हेम राज वन्धु, जयपुर (राजस्थान) ने ₹ २०० की सहयोग राशि भेंट की। आर्य वन्दना परिवार इनका धन्यवाद व्यक्त करता है।